भजन साहिब जी के

भजन 1 (भाग–1)

क्यूं अकेला छोड़ दिया है – 2 मुझको इस अंधकार में – 2
यहां तो सब ही जाग रहे हैं – 2 चांद तारों के लिए – 2

1 झूठा ये संसार सारा – 2 झूठा ये परिवार है – 2
झूठे जग के रिश्ते नाते – 2 झूठा ही दरबार है – 2
मैं किसी को कैसे जानूं – किस गली बाज़ार में – क्यूं अकेला ––

2 मंदिर देखे तीर्थ देखे – 2 ऋषि–मुणि भी ध्यान में – 2
झूठी जग की प्रीत देखी – 2 झूठा सब प्रचार है – 2
सच्ची भक़्ति प्रीत देखूं – किस मंदिर दरबार में – क्यूं अकेला ––

3 विपति आए धन ले जाए – 2 रक्खे जो भी लाखों करोड़ – 2
यह माया कोई जाने नांहि – 2 पल पल बड़ें करोड़ – 2
मैं क्या बोलूं क्या अच्छा है – क्या अंदर क्या बाहर – क्यूं अकेला ––

4 बिगड़ी बात बने तो नांहि – 2 बिन संतन की औट – 2
जैसे फटे दूध का – 2 कोई ना करता मोल – 2
संतन पास डौर ऐसी – जोड़ें अंदर बाहर – क्यूं अकेला ––

5 साहिब छवि नैनन बसी – 2 ओर छवि कहां समाए – 2
अब जो भी आए पथिक – 2 खाली हाथों जाए – 2
संत रहते पास जब है – जोड़ें सुरति आप – क्यूं अकेला ––

6 जो संतन जग मारयो – 2 सुरत सुरंगा बाण – 2
बान अकेला रह गया – 2 पायो पद निर्वाण – 2
संतन के नैनन में ज्योति – जोड़े सुरति श्वांस – क्यूं अकेला ––

7 जो साहिब गति सुरति की – 2 संतन की गति सोहे – 2
जिस घर में वे पग धरें – 2 पल में चानन होए – 2
संत के चरणों में ज्योति – छूते छूटें विकार – क्यूं अकेला ––

8 संत धोबी शिष्य कापड़ा – 2 साबुन सिरजन हार – 2
सुरत सिला पर धोईए – 2 निखरे रंग अपार – 2
संत के हाथों में है ज्योति – जिसके गुण अपार – क्यूं अकेला ––

क्यूं अकेला छोड़ दिया है – 2 मुझको इस अंधकार में – 2
यहां तो सब ही जाग रहे हैं – 2 चांद तारों के लिए – 2

–0–

भजन 2 (भाग–2)

क्यूं अकेला छोड़ दिया है – 2 मुझको इस अंधकार में – 2
यहां तो सब ही जाग रहे हैं – 2 चांद तारों के लिए – 2

1 साधो सुरति प्रेम की – 2 मत तोड़ो झटकाए – 2
टूटे फ़िर ये ना जुड़े – 2 जुड़े गांठ पड़ जाए – 2
प्रेम गली अति सांकरी – जां में दो ना समाए – क्यूं अकेला ––

2 साहिब ऐसे हो रहिए – 2 जैसे कख दरबार – 2
पैरां हेठ लताड़िये – 2 तेरे नाल संतन सूं प्रीत – 2
संतन धूली माथे लगी – सुरति चली निजधाम – क्यूं अकेला ––

3 कया करूं बैकुण्ठ जाकर – 2 कल्प वृक्ष की छांव में – 2
दास को निज घर है जाना – 2 जहां से हंसा आया – 2
आत्म में मन वासा है – मन जाए हंसा बने – क्यूं अकेला ––

4 जांऊ शरणागति साहिब की – 2 भव सागर की नाव – 2
साहिब कहें जग उद्धार का – 2 नहीं कोई ओर उपाए – 2
जीव में मन प्राण हैं – दोनों जांए हंस बने – क्यूं अकेला ––

5 चरण छुए मस्तिक छुए – 2 छुए आत्म ध्यान – 2
ऐहों छूवत संत छोड़ दे – 2 कुछ भी रहे ना पास – 2
साहिब जी जब संग में – सुरति भी तेरे पास – क्यूं अकेला –

6 साहिब हैं मुक़्ति के दाता – 2 चाभी उनके हाथ में – 2
जिस पे वे रहमत करें – 2 पद पायो निर्वाण – 2
हंस बन सत्तलौक सिधाए – जन्म मरण से पार – क्यूं अकेला

7 अमर लौक है घर हमारा – 2 झूठा ये संसार – 2
सार सब्द की दात पाले – 2 जो है संतन पास – 2
सार सब्द निज औषधि – काटे काल जंजाल – क्यूं अकेला ––

क्यूं अकेला छोड़ दिया है – 2 मुझको इस अंधकार में – 2
यहां तो सब ही जाग रहे हैं – 2 चांद तारों के लिए – 2 – क्यूं अकेला ––

–0–

भजन 3

शब्द शब्द सब कोई कहे – वह तो सब्द विदेह
जीवा पर आवे नहीं – निरख़ परख़ के ले –– साहिब जी ––

1 औंकार है वेद का मूला – साहिब को है सब जग भूला
है काल ही औंकार – जिसे पूजे सकल संसार –– साहिब जी ––
2 गुप्त भयो है संग सब के – मन स्वरूपी निरंजन सब पूजें
सुन्न गुफ़ा में निवास कीना – सब जीव गये भरमाऐ –– साहिब जी ––
3 गुप्त निरंजन संग सब के – मन ही करावे सब काम
आप चलावे आप मिटावे – दुखों से भरा सब संसार –– साहिब जी ––
4 पाप पुण्य यहां कर्म पसारा – जो बीजो सो होए तुम्हारा
पूर्ण संत जब तुम पायो – पूर्ण हंसा हो रूप तुम्हारा –– साहिब जी ––
5 करो कमाई जो कुछ – कभी ना निष्फल जाऐ
संत के चरणों में बैठ कर – अर्पण करें जो है तुम्हारा –– साहिब जी
6 संतन वाणी रत्न जवाहर मानक – आत्म मन छोड़े हंसा बन जाऐ
सात सुरत से हो शादी – हंसा संग निज घर को जाऐ –– साहिब जी –
7 संत हैं कंडा तोल तराजू – आप ही झोली भरता जाऐ
जो भी आए ईस घर अंदर – पल में अमृत वर्षा पा जाऐ –– साहिब जी
8 कबीर सत्तपुरूष के रूठते – संतन शरणी जाऐ
कहे कबीर संत रूठते – सत्तपुरूष ना होत सहाऐ –– साहिब जी ––
9 सुरति सब्द में जोड़ दे – खुलें सुष्मिन द्वार
उल्टी हो जाऐ सुरति – करो संतन दिदार –– साहिब जी ––
10 सुरत सब्द में ध्यान दो – पहुंचो सुरत कमल दरबार
संतन चरणन में सर धरो – पाओ जोत अपार –– साहिब जी ––

भजन 4 (भाग–1)

अव्वल संत कबीर – दूजे रामानंद
तां से सार सब्द प्रकट भयो –सात द्वीप नौ खण्ड –– साहिब जी ––

1 अनंत कोटि ब्राह्मण्ड में – निःअक्षर सब्द प्रकटायो (सत्तपुरूष का)
साहिब ही सत्तपुरूष रूप हैं – जननी जना ना पाय
जो जन इनको जान ले – परम मोक्ष पा जाऐ –– साहिब जी ––

2 कोई कोई संत सत्तलौक से ही आता – करें जगत कल्याण
इनकी महिमा क्या कोई जाने – जिन के गुण अनेक
जो कोई आऐ शरण में इनकी – कटें कर्म क्लेश –– साहिब जी ––

3 पूर्ण संत बिना इस जग अंदर – छूटे एको नांहि
जग में संत बिन कोई बिरला ही – काटे कर्म क्लेश
बिन संतो की शरण सब – अटके रहें जग मांहि –– साहिब जी ––

4 दादू संत नाम जहाज पर – गये समुंद्र तीर
सार नाम जिन पाया – गये समुंद्र तीर
सार नाम की दात को पाकर – बने सभी महान –– साहिब जी ––

5 दरिया घाट पर वस्त्र जो धोता – धोबी ही कहलाऐ
सार सब्द की दात जो देता – वही संत्त कहलाऐ
सार सब्द सत्तपुरूष का वासा – सोहि नाम जहाज –– साहिब जी ––

6 चिंता तो सत्तनाम की – और ना चितवे दात
जो कुछ चितवे नाम बिन – बने काल का ग्रास
सत्तनाम निज सार है – सब शब्दों का सार –– साहिब जी ––

7 संत्त समान जग कोई नहीं – प्रेमी शिष्य समान
अमरलोक की संपदा – संतन दीनी दान
अमरलोक अमृत की वर्षा – पड़ती मुख में आन –– साहिब जी ––

अव्वल संत कबीर – दूजे रामानंद
तां से सार सब्द प्रकट भयो –सात द्वीप नौ खण्ड –– साहिब जी ––

–0–

भजन 5 (भाग–2)

अव्वल संत कबीर – दूजे रामानंद
तां से सार सब्द प्रकट भयो –सात द्वीप नौ खण्ड –– साहिब जी ––

1 सार सब्द को पाऐ कर – मिटे रोग संताप
मनवा तो शीतल भयो – हंस चलयो आकाश
मन गया हंसा बना – यही सुरति का काज –– साहिब जी ––

2 शीष उतारे भुई धरे – तां पर राखें पांओं
कहे कबीर धर्म दास सूं – ऐसा होए तो आओ
चाह गई चिंता गई – तभी काज सब होए –– साहिब जी ––

3 नाम वंत जग लाखों हैं । ध्यान वंत अनेक
जो कोई गुरूवंता बने – उससे बड़ा ना एक
संतन की सेवा करे – परम पद को पाए –– साहिब जी ––

4 दिव्य दृष्टि से दर्शन करें – दिन में कंई कंई बार
पल पल उनके दर्शन में – बीतें पल हज़ार
उन से प्रीति ऐसी हो – हर सांस बसें वह आप –– साहिब जी ––

5 स्वामी से सेवक बड़े – जैसे कृष्ण राधा के संग
जब राधा सुरति धरे – कृष्ण भी होते संग
काल और स्थान को – मीरा किया सब पार –– साहिब जी ––

6 अंदर से सब पाईए – बाहर से कूड़ व्यवहार
अंदर तेरे हीरे मोती – बाहर मन व्योपार
अंदर तेरे अपने हैं – बाहर सपने हज़ार –– साहिब जी ––

अव्वल संत कबीर – दूजे रामानंद
तां से सार सब्द प्रकट भयो –सात द्वीप नौ खण्ड –– साहिब जी ––

–0–

भजन 6 (भाग–1)

जीवन का मैनें सौंप दिया – सब भार तुम्हारे हाथों में
उद्धार पतन अब मेरा है – दातार तुम्हारे हाथों में

1 है तुझ में मुझ में भेद यही – मैं साधक हूं तुम साहिब हो
मैं हूं इस काल के हाथों में – है काल तुम्हारे हाथों में
ये भेद अगर कोई जान सके – पल में वो भगत बन जाएगा
जीवन का मैनें ——

2 पूर्ण संत ही सच्चे दाता हैं – और खुद ही जगत विधाता हैं
वह पारस बन जग आते हैं – तुम उनसे ही बन जाते हो
वह सुरत सब्द की ज्योति से – तुम्हें ऐसा रूप दे जाते हैं
जीवन का मैनें ——

3 तुम कंई जन्मों से बिछड़े हो – और जन्म जन्म के प्यासे हो
जे पूर्ण संत जान सको – जन्मों जन्मों की प्यास बुझे
इक संत ही जग में ऐसे हैं – जो सुरत जहाज चलाते हैं
जीवन का मैनें ——

4 तुम तर्क तम्मा में जीते हो – इस झूठी माया के सपने में
तुम 'मैं' को अपनी जान सको – पल में बंधन छुट जाते हैं
जे संत की शरणी में सर को – इक बार झुकाना आ जाए
जीवन का मैनें ——

5 श्रद्धा की दौलत तुम्हारी है – जो संग में अपनी लाए हो
इसी के सहारे जीवन में – तुम खोया हुआ सब पाते हो
ये तुम को पार लगाती है – पल पल में राह दिखाती है
जीवन का मैनें ——

6 ये सब जग राख की ढेरी है – इस में ही सभी समाते हैं
आशा तृष्णा को संग लिए – तुम बार बार जग आते हो
जो आशा तृष्णा को तज दे – वो फिर नहीं जग में आता है
जीवन का मैनें ——

जीवन का मैनें सौंप दिया – सब भार तुम्हारे हाथों में
उद्धार पतन अब मेरा है – दातार तुम्हारे हाथों में

—0—

भजन 7 (भाग–2)

जीवन का मैनें सौंप दिया – सब भार तुम्हारे हाथों में
उद्धार पतन अब मेरा है – दातार तुम्हारे हाथों में

1 जिस दिन जग में बस एक दिखे – तन मन से पार हो जाओगे
तुम जागे हुए कहलाओगे – सुरति की धुन में गाओगे
अब सुरत सब्द में खो कर ही – अंदर की जोत जगाओगे
जीवन का मैनें ———

2 जिस के मन में जब प्रेम जगे – वो खुद प्रेमी बन जाता है
जब प्रेम ही केवल शेष बचे – वो प्रेम जोत बन जाता है
अब किस ने किस को पाना है – जब दोनों संग समाते हैं
जीवन का मैनें ———

3 सत्यम शिवम सुंदरम से पार हो जो – वो पूर्ण आनंद को पाते हैं
जब पूर्ण से ही पूर्ण हो – सागर ही वह कहलाते हैं
अब हंस ही संग साहिब के – साहिब ही कहलाते हैं
जीवन का मैनें ———

4 बिन पूर्ण संत और सार सब्द – कुछ भी नहीं हाथ में आता है
जब सार सब्द की दौलत हो – तन मिटता है मन खो जाता है
अब हंस ही केवल शेष बचे – जो अंग संग साहिब को पाता है
जीवन का मैनें ———

5 अब चारों ओर हरियाली है – और हर मौसम इक दृष्टा है
अब हर जीव एक ही ज्योति है – और हर प्राणी तेरा हंसा है
अब और तो जग में है ही नहीं – जो तुझ बिन तुझ को दिखता है
जीवन का मैनें ———

6 अब सच को पूरा जाना है – और खुद को भी पहचाना है
अब तुझ में और संतन में – कोई भेद नज़र नहीं आता है
अब दो नैनन के आंसू बन के – आत्म की शुद्धी होती है
जीवन का मैनें ———

7 अब आंसू शेष ही रह जाते हैं – जो झरना बन कर बहते हैं
अब हंसा ही केवल अंदर – जो परम हंस बन जाते हैं
पल ही पल में हंसा ज्योति – निज रूप में जा समाती है
जीवन का मैनें ———

जीवन का मैनें सौंप दिया – सब भार तुम्हारे हाथों में
उद्धार पतन अब मेरा है – दातार तुम्हारे हाथों में

—0—

भजन 8 (भाग—1)

क्यूं छोड़ा हंसों को इस त्रिलोकी में
खुद तो चुप हो बैठे हम को ठुकरा के
कहां खोए मेरे साहिबा – हम को ठुकरा के

1 तेरे मिलन के सपने सच्चे – सच्ची तेरी यादें हैं
झूठे जग के सब रिश्ते हैं – झूठी प्यार की रस्में हैं
सच्चा प्यार सिखा के – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसों को ———
2 हम में अपना रूप बसा कर – हम को अकेला छोड़ दिया
लेकर हमसे प्यार की दुनियां (सत्तलौक) – हमको तड़पता छोड़ दिया
हम को प्यार सिखा के – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसों को ———
3 मांगी थी चरणों की सेवा – हमने सेवा के बदले
सेवा स्मिरण प्यार और यादें – दे गये सेवा के बदले
सच्ची प्रीत सिखा के – इस त्रिलोकी में
कयूं छोड़ा हंसों को ———
4 बिन आहट के जाने क्यों – वो हमको अकेला छोड़ गये
ग़म से भीगा हर हंसा – संतों के लिए ही छोड़ गये
सच्चा रूप दिखा के – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसों को ———
5 बिन मांगे हमने यहां पाया – तन मन अपने संग यहां
मन हमको पल पल भरमाता – आत्म उलझाने के लिए
कैसे छूटे तन–मन – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसो को ———

6 बिन मांगे स्वर्ग और पाताल – मृत्यू खंड में अकेला छोड़ दिया
चौरासी में फंसा हर प्राणी – केवल दुख पाने के लिए
कैसे छूटे काल–जाल – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसों को ———

7 जोगी, यति और सन्यासी – ये सब काल से हैं बेहाल
जारी जारी भस्म करी डारे – आवागमण करे बेहाल
संत ही बंधन आन छुड़ावें – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसों को ——

8 काल जाल से बचना चाहो – गाओ सब्द तत्कारा
संत ही केवल आन छुड़ावें – दे सब्द यही प्यारा
सत्तसब्द ही अमर बनावे – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसों को ———

9 आप ही रचियता 'मन' के – 'निरंझन' जिन को नाम दिया
उन्हीं के हाथों सब हंसों को – करनी के हाथों छोड़ दिया
क्यूं भरमों में डाला – इस त्रिलोकी में
क्यूं छोड़ा हंसों को ———

क्यूं छोड़ा हंसों को इस त्रिलोकी में
खुद तो चुप हो बैठे हम को ठुकरा के
कहां खोए मेरे साहिबा – हम को ठुकरा के

—0—

भजन 9 (भाग–2)

नहीं छोड़ा हंसों को इस त्रिलोकी में
नहीं मैं चुप हो बैठा तुम को ठुकरा के
नहीं मैं कहीं भी खोया – तुम को ठुकरा के

1 मेरी तो बस इतनी चाह थी – तुम जग में खुशहाल रहो
चक्रव्यूह है रचा निरंझन – जिसमें रहते तुम बेहाल
तुझको सुरति दी है – इस त्रिलोकी में
नहीं छोड़ा हंसों को ———

2 वचन दिया निरंकार को मैनें – उस को तो नहीं तोड़ सकूं
वचन तो मेरा पूरा होगा – सब हंसों को हर लूंगा
सच्ची बात को जानो – इस त्रिलोकी में
नहीं छोड़ा हंसों को ———

3 मैं हूं रचियता तीन लौक का – निरंकार है रखवाला
गुप्त रूप में संग तुम्हारे – मन ही उसने नाम दिया
तन मन को बस छोड़ो – इस त्रिलोकी में
नहीं छोड़ा हंसों को ——

4 हंसा तूं तो अमरलौक का – पड़ा काल वस आई
तीन–पांच–पच्चीस का पिंझरा– जा में गया भरमाई
हंसा बन घर तुम आओ – इस त्रिलोकी से
नहीं छोड़ा हंसों को ———

5 तन मन की प्रीत में पड़ कर – भूल गये अविनाशी को
तुम तो हो उस देश के वासी – जहां साहिब जी वासा है
सच्चे साहिब को जानो – इस त्रिलोकी में
नहीं छोड़ा हंसों को ———

6 जो ज्ञानी हो संत का प्यारा – काम क्रौध से हो न्यारा
उन को ध्यान सब्द अधिकारी – काम क्रौध मद्य् छूट गये
सच्चे संत को जानो – इस त्रिलोकी में
नहीं छोड़ा हंसों को ———

7 थोड़ा प्रेम जगा कर देखो – संग में तेरे रहता हूं
तेरे तुझ को दुख जो दिखते – मैं ही केवल सहता हूं
तुम जो मुझसे पीठ किए हो – इस त्रिलोकी में
नहीं छोड़ा हंसों को ———

8 नाम ध्याय हंसा घर आए – फिर कुछ कारज शेष नहीं
संत साहिब तो एक हैं – पा लो सच्चा ज्ञान
हंसा बन घर को तुम आओ इस त्रिलोकी से
नहीं छोड़ा हंसों को ———

9 दूध रूप मिला तुझे जग में – शुद्ध घी ही बन जाना है
यही चक्र व्यूह रचा निरंझन – जिस को तूने ना जाना है
चक्रव्यूह को जानो इस त्रिलोकी में
नहीं छोड़ा हंसों को ———

10 जे तूं पा ले सत्त सब्द को – पल में छूटे काल
तेरा दुख दरिद्र जाए – पहुचों साहिब दरबार
पल में हर दे दुख सारे इस त्रिलोकी से
नहीं छोड़ा हंसों को ———

Sनहीं छोड़ा हंसों को इस त्रिलोकी में
नहीं मैं चुप हो बैठा तुम को ठुकरा के
नहीं मैं कहीं भी खोया – तुम को ठुकरा के

—0—

भजन 10

हम वासी उस देश के – जहां रहते परम पुरूष प्यारे – 2 साहिब जी ——

1 जो देते वह प्यार से – सब हंसा मिल खा लेते – 2 साहिब जी ——
2 हम वासी उस देश के – जहां जात वरण कुल नांहि – 2 साहिब जी ——
3 सब्द मिलावत होत है – देह मिलावा नांहि – 2 साहिब जी ——
4 बिन बादल जहां बिजली चमके – बिन सूरज उजियारा – 2 साहिब जी ——
5 सीप बिन जहां मोती उपजे – सूर्य बिन सब उजियारा – 2 साहिब जी——
6 ज्योति लगे ब्रह्म जहां दरशे – आगे अगम अपारा – 2 साहिब जी ——
7 कहत कबीर सुनो भई साधो – भूजे गुरू मुख प्यारा – 2 साहिब जी——
8 महरमी होया तो जानो संतो – ऐसा देश हमारा – 2 साहिब जी ——
9 निराकार आकार ना ज्योति – ना तंह वेद विचारा – 2 साहिब जी ——
10 औंकार कर्त्ता तहां नांहि – नांहि तंह काल पसारा – 2 साहिब जी ——
11 वह साहिब सब संत पुकारें – और पाखण्ड है सारा – 2 साहिब जी ——

हम वासी उस देश के – जहां रहते परम पुरूष प्यारे – 2 साहिब जी ——

—0—

भजन 11

धन्य धरि सोई जहां सत्संग
धन्य धन्य साहिब–भक्ति सबंग

1 परहित सरित धर्म नहीं कोई – पर पीड़ा सम नहीं भलाई
जो मिल जाई सोई साहिब बढ़ाई – जो देवे दस गुण सो पाई
2 आपन से उंचे की करो बड़ाई – मन की तृष्णा मिटी मिटी जाई
मैं को संग से दूर भगाई – मन माया सम कोई बंधन नांहि
3 हम हंसा केवल आत्मण नांहि – जिसका घर बिन अमरपुर दूजा नांहि
हम सत्तपुरूष के अंश, पिता कोई दूजा नांहि – इस त्रिलोकी में तुम गयो भरमाई
4 अंदर बाहर करो शुद्धी भाई – आशा तृष्णा में ही है सब बुराई
इन को तज दे पल में निज घर मिल जाई – दुख सुख का बस कारण यही
5 इसी कारण बार बार जीव धाम में आई – तज दे मान अभिमान फिर चिंता नांहि
पूर्ण संत संग कर सत्संग – हो बुद्धी निर्मल और मन गयो मान मेरे भाई
6 तन मन की आस सब जाए – सार सब्द की धुन में सुरत समाए
सुरति सब्द पवन ध्यान एक हो जाए – उंची ताने सुरति को त्रिकुटि में जाए
7 स्वांस उठाओ करो मकड़ी के जाल की नयाई
झरोखा खोले अनहद की नाद धुन में जा समाए
परम ज्योत के दर्शण पाए
8 यह सब निरंकार पसारा – जिस के वश त्रिलोकी सारा
अब ध्यान आज्ञा चक्र से उपर – गुरू स्थान में जा समाए
सतगुरू संग सुरत कमल में जा समाए
पल ही पल हंसा बन कर संग साहिब के अमर धाम को जाए

धन्य धरि सोई जहां सत्संग
धन्य धन्य साहिब–भक्ति सबंग

–0–

भजन 12

हंसा क्या उम्र तुम्हारी – कहां से आई कहां है जाना
यह सब हम सब को बतलाना – जो जाने सो साहिब
कहलाए क्या है उम्र हमारी – साहिब जी ––

1 असंख्य युग प्रलय भई – तब के हम ब्रह्मचारी – 2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
2 कोटि बार निरंकार सोयो और जागयो – 2
हमने देखी लीला सारी – हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
3 सुन्न में सब खो जाता है – निरंकार के इक दिन की लीला न्यारी – 2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
4 दश–कोटि बार बह्मा उपजे – सात कोटि शम्भू जटाधारी – 2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
5 तब साहिब जी इक पल काटयो – मत पूछयो अब उम्र हमारी – 2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
6 नहीं बूढ़ा नहीं बालक नहीं योवन धारी – क्या बतलाऊं क्या है उम्र हमारी–2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
7 कोटि प्रलय हम ने धारे – कभी ना हुई मृत्यू हमारी – 2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
8 कहे कबीर प्यारे गोरख़ – यह है उम्र हमारी – 2
अब मत पूछो क्या है उम्र हमारी – साहिब जी ––
9 हम है हंसा रूप अमर पुर के – बूझो आप ही उम्र हमारी – 2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
10 फिर ना कहना हमसे हंसा – क्या है उम्र तुम्हारी – 2
हंसा क्या है उम्र तुम्हारी – साहिब जी ––
हंसा क्या उम्र तुम्हारी – कहां से आई कहां है जाना

यह सब हम सब को बतलाना – जो जाने सो साहिब
कहलाए क्या है उम्र हमारी – साहिब जी ––

–0–

भजन 13 (भाग 1)

अनहद नाद उठे हृदय से – भंवर गुफ़ा बाजे धुन रे
त्रिकुटि महल में जा समाए – सुन्न महल झंकारी रे

1 सुरत–निरत मन पवन जब इक हों – खुद की सुद्ध जब खो जाती है
त्रिकुटि महल में होए उजियारा रे – 2
अनहद नाद उठे ––

2 आंख ना मूंदे काल ना रूंदे – आसन पद्म लगा कर बैठो
त्रिकुटि महल में ध्यान जमाओ – सुनो नाद झंकारी रे
अनहद नाद उठे ––

3 पहले पहले रिल मिल बाजे – अति धीमी अति प्यारी रे
झीनी धुन में सुरति डालो – सुनो नाद झंकारी रे
अनहद नाद उठे ––

4 घंटा–घंटियां–बांसुरी–वीणा – संख–सारंगी वर्षा की रिमझिम
धुन अति है प्यारी रे – 2
अनहद नाद उठे ––

5 यह दुनियां अति सुखदायी – आनंद दे अति भारी रे
अमृत बूंद झरे मुख मांहि – करे अति सुखकारी रे
अनहद नाद उठे ––

6 जिस धुन पर तुम ध्यान धरो – सैल आसमानी करें अति प्यारी रे
पपील चाल से सुन्न लोकों की – सैल करे अति प्यारी रे –
अनहद नाद उठे –––

अनहद नाद उठे हृदय से – भंवर गुफ़ा बाजे धुन
त्रिकुटि महल में जा समाए – सुन्न महल झंकारी रे

–0–

भजन 14 (भाग 2)

अनहद नाद उठे हृदय से – भंवर गुफ़ा बाजे धुन
त्रिकुटि महल में जा समाए – सुन्न महल झंकारी रे

1 जहां चाहो तुम रूक सकते हो – सुरति जैसी हो तुम्हारी रे
घंटियां–नाद में सुरत लगाओ – सुनो ऊँ नाद झंकारी रे
अनहद नाद उठे ––

2 ऐसा लागे जैसे अमृत वर्षा हो – सुनो नाद ये प्यारी रे
ज्यूं सुरत धरो इस नाद पर – आठों पहर सिर उपर – सुनो नाद यह प्यारी रे
अनहद नाद उठे ––

3 इसी नाद से महासुन्न लोकों की – सैल करो तुम प्यारी रे
मीन चाल से करो सैल – महासुन्न अति प्यारी रे
अनहद नाद उठे ––

4 यह नहीं अंतिम पराकाष्ठा – इसमें भी मन शामिल रहता रे
हमको जाना सत्तलौक साहिब के – विहंगम चाल प्यारी से
अनहद नाद उठे ––

5 हंसा रूप जब पाओ तुम – सुरत सब्द से चेतन हो
सैल करो निज धाम की रे
अनहद नाद उठे ––

6 अब तुम जाओ घर अपने को – कुछ ना रहा शेष रे
बस साहिब के मिलन की तैयारी रे
अनहद नाद उठे ––

अनहद नाद उठे हृदय से – भंवर गुफ़ा बाजे धुन
त्रिकुटि महल में जा समाए – सुन्न महल झंकारी रे

–0–

भजन 15 (भाग 1)

क्यों नहीं तुम सत्त हो जाते – वो तो तेरा रूप है
तब ही तुम यह जान पाते – जो जीते हो जीवन नहीं

1 सत्तगुरू को निरख परख कर – अपना जीवन जान लो
जग के रिश्ते झूठे बंधन – जग की माया जान लो
निज का सच्चा रूप जानो – जिस में कुछ खाली नहीं
क्यों नहीं तुम ———

2 भागना चलना छोड़ने से – निज का तुम ले लो पता
आषा तृष्णा में खोए हो – तो ही मंज़िल ना दिखी
एक बार तुम रूक के पाते – यह तो तेरे हाथ में
क्यों नहीं तुम ———

3 जीवन है प्रीति–आनंद–सत्त – कहीं बाहर मत खोजो तुम
साधन तो केवल बाहिर ही है – साध्य तेरा रूप है
एक बार तुम जाग जाओ – कुछ भी तो मुश्किल नहीं
क्यों नहीं तुम ———

4 अंदर का खाली पन जो दिखता – बाहिर से कैसे भर सको
कुछ तो इनमें मेल नाहीं – तो ही तो तूं सो रहा
एक बार तुम सुरति में रहते – सोना माटी एक सा ।।
क्यों नहीं तुम ———

5 जीवन में जो भी पाने जैसा – चलने से ना पा सको
जीवन का सत बाहिर नहीं –जिस की तुझको खोज है ।
रूकने से सब पास मांही – सार सब्द सूं मेल है ।।
क्यों नहीं तुम ———

6 अष्ट्म चक्र में स्वांसा जो जाती – सुरति सूं होता मेल है
मूल सुरति बनने से यह – विहंगम चाल पा जाती है ।
एक बार पट सुषमन खोले – निज घर तेरे पास में ।।
क्यों नहीं तुम ———

क्यों नहीं तुम सत्त हो जाते – वह तो तेरा रूप है ।
तब ही तुम यह जान पाते – जो जीते हो जीवन नहीं।।

—0—

भजन 16 (भाग 2)

क्यों नहीं तुम सत्त हो जाते – वह तो तेरा रूप है ।
तब ही तुम यह जान पाते – जो जीते हो जीवन नहीं।।

1 सुरति फंसी संसार में जब – तांहि अमरपुर दूर है
सुरति जब सत्त सब्द में रहती – मन माया सूं दूर हो ।
सुरति निरति 'आत्म' हंसा कर – मोक्ष पद तो पास में ।।
क्यों नहीं तुम ——

2 सार सब्द सत्तगुरू हैं लाते – सत्तपुरूष की सुरति सूं
'मै' की मोमबत्ती बुझाते – परम ज्याति साथ में ।
जग तो 'मै' को छोड़ता ना – सुख सागर उस पार में ।।
क्यों नहीं तुम ——

3 अंदर का खालीपन ना जाता – बाहिर की झूठी आन सूं
मांगने की ना भूख जाती – कितनी माया पास में ।
अंदर बाहर का मेल ना हो – सब माटि, एक सच्चा संत है ।।
क्यों नहीं तुम ——

4 अंदर से जब सम्राट हो तुम – बाहिर की माया छूटती
बाहिर जब सम्राट वस्त्र – अंदर तो सब खाली पड़ा ।
बाहिर तो प्रलोभन हैं केवल – अंदर तो सत्त की जोत है ।।
क्यों नहीं तुम ——

5 सत्तगुरू सा ना कृपा सिंधु कोई – वह तो साहिबन रूप है
सार सब्द की दात देते – जा में सत्तपुरूष वासा है ।
एक बार तुम पा के देखो – पल में तूं उस पार है ।।
क्यो नहीं तुम ——

6 भगवन के रूठने से – कुछ भी तो घटा नहीं
सत्तगुरू के रूठने से – मोक्ष पद मिलता नहीं ।
उलटि कर जीवन धारा – सत्त होते ही मौक्ष है ।।
क्यों नहीं तुम——

क्यों नहीं तुम सत्त हो जाते – वह तो तेरा रूप है ।
तब ही तुम यह जान पाते – जो जीते हो जीवन नहीं।।

—0—

भजन 17 (भाग 1)

ग़ीता का ज्ञान सभी जग को बतला दिया बंसुरी वाले ने – 2
जो सोते हैं सो ख़ोते हैं –2 जो जागे हैं सो पाते हैं
इसमें युग़ काल की बात कहां – जो जागेगा सो पाएगा – 2
ग़ीता का ज्ञान ––

1 अर्जुन तो पल–पल संग रहा – पर मन को वो ना जान सका – 2
अंदर की आँख ना जाग सकी – भगवान को ना पहचान सकी –2
भगवन तो संगी साथी थे – कुछ ख़ास अर्जुन ना ही पा सका
इसमें युग़ काल ––

2 खुद आप प्रभु जग आए थे – भटकों को राह दिखाने को – 2
ईक विदुर ही उनको जान सका – पति–पत्नि नें उनको मान दिया – 2
वो जंगल वेले जाते थे – ग्वालों को बंसुरी सुनाते थे
इसमें युग़ काल ––

3 वो भगवन हो कर दीन बने – और दोनों का उद्धार किया – 2
वो पल–पल उन्हें हरशाते थे – हर दुख़ में साथ निभाते थे – 2
ये भेद कोई बिरला पाता है – जो सुरति में ख़ो जाता है
इसमें युग़ काल ––

4 वो चारों वेद के ज्ञाता थे – और उनमें ही रमे रहते थे – 2
वो अनहद धुन में रहते थे – जागों को राज़ बताते थे – 2
ये भेद अग़र कोई जान सका – वह कुछ जाग़ा कहलाता है
इसमें युग़ काल ––

5 वो अर्जुन को समझाते हैं – जीने का राज़ बताते हैं – 2
ईस जग़ से प्रीती झूठी है – जो सपने मानद होती है – 2
जो सच्ची प्रीती जानेगा – अपने आप को पहचानेगा
इसमें युग़ काल ––

6 ये जीना मरना झूठा है – सच्चा मरना ही जीना सच्चा है – 2
जग़ कर्म–जाल का बंधन है – तम्हें हर पल भय दे जाता है – 2
ये मन–माया का खे़ल जहां – जो आत्म को भरमाता है
इसमें युग़ काल ––

7 मीरा ने गि़रधर सूं प्रीत करी – और सुरति में उनके संग रही – 2
वो हर पल मर जाती थी – और भगवन को पा जाती थी – 2
वो सच्ची प्रीत जान गई – और अपने को पहचान गई
इसमें युग़ काल ––

ग़ीता का ज्ञान सभी जग को बतला दिया बंसुरी वाले ने – 2
जो सोते हैं सो ख़ोते हैं –2 जो जागे हैं सो पाते हैं
इसमें युग़ काल की बात कहां – जो जागेगा सो पाएगा – 2
ग़ीता का ज्ञान ––

–0–

भजन 18 (भाग 2)

सतलोक का ज्ञान सभी जग को – बतला दिया सतगुरू प्यारे ने – 2
जो सोते हैं सो ख़ोते हैं –2 जो जागे हैं सो पाते हैं
इसमें युग़ काल की बात कहां – जो जागे हैं सो पाते हैं – 2
सतलोक का ज्ञान ––

1 सच्ची प्रीत तो जग़ में ऐसी है – जो मिटा कर खुद मिट जाती है – 2
जब दोनों मिट सुरति ही बने – तो खुद साहिब बन जाती है – 2
अब तो बस इक साहिब हैं – खुदी कहां रह जाती है
इसमें युग़ काल ––

2 तेरी हर स्वांसा में प्राण बसें – जो सुरति में आन समाते हैं – 2
हर आत्म जौत में सुरति है – जो प्राण से चेतन होती है – 2
निरति–सुरति सूं मिलने पर – साहिब तुझमें आन समाते हैं
इसमें युग़ काल ––

3 जब मानुष सारे सोते हैं – तब संत ही जागे होते हैं – 2
इनमें साहिब जी रहते हैं – मानुष को आन जगा़ते हैं – 2
जो सुरति में हर दम रहते हैं – वो सच्चे घर को जाते हैं
इसमें युग़ काल –

4 साहिब ने तुझको सब है दिया – पर तुझको वह सब याद नहीं – 2
जब जागोगे ईस तन–मन से – संत राज़ तुम्हें समझाऐंगे – 2
तुम रहते हो जग़ में पीठ किए – आत्म को कैसे जानोगे
इसमें युग़ की ––

5 तेरा जीवन रात हनेरी है – तेरी जोत जगन की देरी है – 2
जब अंदर आंख़ से देखोगे – जीवन के राज़ को जानोगे – 2
कुछ भी तो जग में अपना ना – ये झूठे रिश्ते नाते हैं
इसमें युग़ काल ––

6 साहिब तो हर पल संग तेरे – पर तुम ही द्वार के पार खड़े – 2
वो तुम को देख मुस्काते हैं – पर तुम उन्हें देख ना पाते हो – 2
तुम अपनी आंख के परदों को – ख़ोलो तो संग ही पाओगे
इसमें युग़ काल ––

7 वो दीनों के भी दीन प्रभू – हर पल वो तुम संग रहते हैं – 2
जो हर दम सुरति ध्यान धरें – साहिब उनके बीच में रहते हैं – 2
वह तो प्रीत प्रेम के साग़र हैं – तुम प्रीत ना उनकी जान सके
इसमें युग़ काल ––

8 कोई बिन सत्तगुरू ना पा ही सके – कौटिन क्युं जन्म ना ध्यान धरें – 2
गुरू रूप में वो तो रहते हैं – तुझको वो आन जगाते हैं – 2
पूर्ण गुरू की मेहर से होता है – जो सब कुछ अपना ख़ोता है
इसमें युग़ काल ––

सतलोक का ज्ञान सभी जग को – बतला दिया सतगुरू प्यारे ने – 2
जो सोते हैं सो ख़ोते हैं –2 जो जागे हैं सो पाते हैं
इसमें युग़ काल की बात कहां – जो जागे हैं सो पाते हैं – 2
सतलोक का ज्ञान ––

–0–

भजन 19 (भाग 1)

ये दुनियां है धौख़ा जानो प्यारे – कुछ भी जहां में हमारा नहीं है – 2
जो दौड़ेगा बाहर पाने को माया – उनका पैमाना ख़ाली रहेगा – 2

1 ये मौसम बहारें ये चांद सितारे – 2 जो भी नज़र में तुम्हारा नहीं है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

2 जो अंदर हैं जाते ध्यान लगाते – 2 पता नहीं उनको जाना कहां है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

3 इंगला वी विनसे पिंघला वी विनसे – 2 विनसे ये तेरी सुश्मिन नाड़ी
मरते समय तेरी ताड़ी कहां है – 2
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

4 नशे में हैं सारे मुझे ये पता है – 2 इस ज़िन्दगी में सभी जी रहे हैं
कोई पी रहा है लहु आदमी का – किसी को नज़र से पिलाई गई है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

5 किसी को नशा है जहां में ख़ुशी का – 2 किसी को नशा है ग़मे ज़िन्दगी का
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

6 किसी को नशा है चांद तारों पे जाना– 2 किसी को नशा सत्तगुरू धूली का पाना
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

7 किसी को नशा है आज्ञा चक्र में जाना – 2 किसी को नशा चार मौक्ष को पाना
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

ये दुनियां है धौख़ा जानो प्यारे – कुछ भी जहां में हमारा नहीं है – 2
जो दौड़ेगा बाहर पाने को माया – उनका पैमाना ख़ाली रहेगा – 2

–0–

भजन 20 (भाग 2)

ये दुनियां है धौख़ा जानो प्यारे – कुछ भी जहां में हमारा नहीं है – 2
जो दौड़ेगा बाहर पाने को माया – उनका पैमाना ख़ाली रहेगा – 2

1 ये नशा ही है धौख़ा जानो प्यारे – 2 इस पल में रहना भक्ति नहीं है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

2 कल–कल के सपने देखे जो प्राणी – 2 जीवन में जो जन सोया हुआ है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

3 जो इस पल में रहता जाग़ा हुआ है – 2 सुरति को उसने जाना हुआ है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

4 जो इस पल में रहता जाग़ा हुआ है – 2 आ तुझको उसने जान लिया है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

5 जब इस पल में रहना आ जाए तुमको – 2 हंसा को तूने चेतन किया है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

6 जो ऐसा हो प्राणी जानों की उसने – 2 सार–सब्द गुरू सूं पाया हुआ है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

7 ऐसा जो हंसा पूर्ण है सत्तगुरू – 2 अब उसने निज घर को पाया हुआ है
कुछ भी जहां में हमारा नहीं है
ये दुनियां है धौख़ा ––

ये दुनियां है धौख़ा जानो प्यारे – कुछ भी जहां में हमारा नहीं है – 2
जो दौड़ेगा बाहर पाने को माया – उनका पैमाना ख़ाली रहेगा – 2

–0–

भजन 21

मन माया तो एक है – 2
मन में रहे समाए । साहिब जी ––

1 सार–सब्द कटार है – 2
पल छिन पावें पार । साहिब जी ––
मन माया तो एक है ––

2 भागत के पीछे रहे – 2
सन्मुख़ भाग़े सोहे । साहिब जी ––
मन माया तो एक है ––

3 मन सुश्मिन में बैठ कर – 2
करता सारे काम । साहिब जी ––
मन माया तो एक है ––

4 मस्तक में तम डाल कर – 2
लेता सारे काम । साहिब जी ––
मन माया तो एक है ––

5 पल–पल पा संदेश को – 2
इंद्री सूं लेता काम । साहिब जी ––
मन माया तो एक है ––

6 आत्म भूली निज रूप को – 2
तन जाने तद रूप । साहिब जी ––
मन माया तो एक है ––

7 इच्छा पूर्ती के लिए – 2
तन को दें सहयोग । साहिब जी ––
मन माया तो एक है ––

मन माया तो एक है – 2
मन माया समाए । साहिब जी ––

–0–

भजन 22

यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना –––

1 साहिब के दरबार में – सहे जो तिल भर दुख
उन दुखों पे वार दूं – कोटि कोटि जन्मों के सुख
यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना –––

2 आओ मेरे प्यारो हंसों पा लो सार सब्द पैमाना ।
मेरा सतगुरू देवे दात, सार सब्द का पालो भेद पुराना ।।
यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना –––

3 अब की बार भूल गए तो, कभी न मिले ठिकाना ।
ऐसे संत सदियों में आते जिनका नांहि घर न ठिकाना ।।
यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना –––

4 जो मिल जाए खा लेते हैं, पहनें वस्त्र, प्रेम पुराना ।
उनके वस्त्र पर मत जाओ, साहिब देत रंग पुराना ।।
यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना –––

5 रात दिन में सेव कमावें, कभी ना पाते ठौर ठिकाना ।
उन की महिमा मैं क्या गाऊं, जिन दिया चरण ठिकाना ।।
यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना ———

6 'वे नाम' अब क्या गाए, जो है पागल दिवाना सा॰ जी
सुरति बोलें सुरति सोचें, सुरति में ही रम जाना ।।
यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना ———

यह समय जो बीत गया तो फिर पैसी पछताना ———

—0—

भजन 23 (भाग 1)

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ——
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना —— 2

1 भवसागर सब सूख गया है – फिकर नहीं भव तरना – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –2 चरण बिना मोहे——
2 कनक कटोरे अमृत भरया – पीवत दास गुरू चरणा – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ——
3 मैं तो दासी जन्म जन्म की – तुझ बिन बूझत नांही – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ——
4 कुछ तो अवगुण हम में काडो – हम भी कान सुने – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ——
5 तुम संग हमने नेह लगाया – तुमरे जहाज चढ़े – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ——
6 विपता हमारी देख तुम चाले – अर्जी सुन लीजे – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ——
7 जिन के प्रीतम परदेस बसत हैं – लिख लिख भेजें पत्तियां – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ——

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ——
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना —— 2

—0—

भजन 24 (भाग 2)

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

1 मेरे साहिब मेरे तन में – किस को भेजूं पत्तियां – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
2 सतगुरू जैसा वेद न कोई – पूछो वेद पुराणा – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
3 दीप सूं प्रीति लागी पतंगा – काहे रे फेर लिया नेह – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
4 गुरूमुख प्रीति लागी संतन सूं – गुरू चरणन चित चैन – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
5 संतों की प्रीति लागी साहिब सूं – इक रूप इक देह – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
6 यह मन मोरा बड़ा ही चंचल – जूं मद मां त्यूं हाथी – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
7 सतगुरू हाथ धरो सिर उपर – मन की मैं मर जाती – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

–0–

भजन 25 (भाग 3)

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

1 पल पल पीव को रूप निहारूं – निरख निरख सुख पाती – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
2 मीरा के प्रभु संत रे दासा – साहिब चरण चित राखी – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––

3 उंची चढ़ चढ़ पंथ निहारूं – रोए अखियां राती – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
4 जब से तुम बिछड़े मोरे साहिब जी – कभी ना पायो चैना – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
5 शब्द सुनत मेरी छतिया कांपे – मीठे लागे रहना – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
6 इक टिक टकी बांध निहारूं – भई छः मासा रैन – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे –
7 विरह व्यथा का से कहूं मैं – बह गई सुरति रैन – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

–0–

भजन 26 (भाग 4)

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

1 कंई जन्म से बिछड़ी हूं साहिब जी – कब पाउंगी चैन – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––
2 मेरे साहिब जी कबर मिलोगे – दुख मेटन सुख देन – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––
3 चकवी प्रीतम खोई रैन की – आन मिली प्रभात – 2
तुझ बिन को जग अपना – जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
4 मैं अभागन ऐसी बिछड़ी – दिन मिले ना रैन – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––
5 त्रिकुटि महल में बना है झरोखा – जो सूं दरश मिले – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––
6 शिव नेत्र पर ध्यान जमाओ – सुख व चैन मिले – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––
7 आज्ञा चक्र ध्यान लगाओ – अनहद नाद सुनो – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

–0–

भजन 27 (भाग 5)

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

1 इक नाद पर ध्यान जमाओ – सुख की सैल करो – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––
2 चकोर की प्रीति चांद से लागी – देख देख मिले चैना – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे––
3 मेरे प्रीतम आन मिले हैं – सुरत कमल धरो ध्यान – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
4 सुरत कमल निज देश सतगुरू का – साहिब के दर्श करो – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
5 साहिब की सुरति ऐसी प्यारी – संग में ले ही चली – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
6 बिन पावन के देश प्यारा – बिन बस्ती का देश – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––
7 उंची तानो सुरति को तुम – जहां देखो पुरूष अलेख – 2
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना – 2 चरण बिना मोहे ––

चरण बिना मोहे कुछ नहीं भावे – 2 साहिब जी ––
तुझ बिन को जग अपना – साहिब जी जग माया सब सपना –– 2

–0–

भजन 28

गीता का भेद सभी जन को – बतला दिया बंसरी वाले ने – 2
हर नर के जग को आने का – ये राज़ दिया है प्यारे ने – 2

1 यह जग तो कर्म पसारा है – जो लाता और ले जाता है
पर सच्चा जीवन पाने का – भेद दिया है प्यारे ने

2 भगवन कहते हर मनुष्य को – तूं हर दम मुझमें ध्यान लगा
हानी लाभ सुख दुख तजो – भक्ति करो निज घर जाने को
3 मानुष तन दुर्लभ पाया है – माया तज मौक्ष पाने को
तेरी जौत में उसकी जौत जो है – उसको पाकर पार हो जा
4 अति दूर अरू निकट है जो – तूं उसको जग में जानगा
पर ये सब तूं कैसे जानेगा – बिन जागे ना पहचानेगा
5 बिन सतगुरू कोई ना जाग सके – मन माया सूं ना भाग सके
अतीत के सपने साथ तेरे – आशा तृष्णा भी संग साथ तेरे
6 ये तुझको पल पल भरमाते हैं – तेरे अंदर लौभ बड़ाते हैं
कामी क्रौधी भी तरते हैं – पर लौभी तो ना तरते हैं
7 बिन सतगुरू भेद नहीं मिलता – आंखों का परदा नहीं हटता
बिन सतगुरू जीवन मृत्यू है – ईक चलती फिरती लाश तूं जान
8 जब तक ना जागो मौक्ष नहीं – बंद कली सूं खिलता फूल नहीं
गीता का राज़ जब जानेगा – जीवन ही तूं मर जाएगा
9 यही तो सच्चा जीवन है – जीते जी मरना आ जाए
जब 'मै' से संग छुट जाता है – साहिबन का संग तूं पा जाए

गीता का भेद सभी जन को – बतला दिया बंसरी वाले ने – 2
हर नर के जग को आने का – ये राज़ दिया है प्यारे ने – 2

–0–

भजन 29

ना लो सपने कहीं सपनों से नैया पार होती है – 2
कहीं आंसू बहाने से दुखों का नाश होता है – 2

1 नतीजा मिल गया हमको ये जीवन भूल जाने का – 2
सितम देखा तरंगों का कर्म देखा भटकने का
भूलें आहें भरती है वो यादें हाथ मलती है –– ना लो सपने ––
2 सांसा हम जो लेते हैं उसी में प्राण रहते हैं – 2
आशाओं के भरोसे पर ख़बर क्या थी कि
ज़ालिम आंधियां भी संग चलती हैं –– ना लो सपने ––

3 वैर के संग होने से प्रीत ना जान पाते हैं – 2
खुद के भरोसे पर ख़बर क्या थी कि
अंगारों की राख खुद को ही ढकती है –– ना लो सपने ––

4 जीवन जिसको तुम कहते वही तो मौत लाती है – 2
भूल जानी नहीं अपनी तभी छूटा ना जग आना
प्रभू तुझमें ही रहते हैं कभी ना डूंढ पाते हो –– ना लो सपने ––

5 नतीजा मिल गया हमको मृत्यू के बीज बोने का – 2
वृक्ष जाना तो कड़वा था फल चाखा तो कड़वाया
बीज अंदर ही उगता है यही ना जान पाते हैं –– ना लो सपने ––

6 जानो सच्चे जीवन को जो धारा तुझमें बहती है – 2
शब्द पाया जो अमृत है दुखों का नाश खुद देखा
साधन छूट जाते हैं साध ही शेष रहता है –– ना लो सपने ––

7 सतगुरू मिलने से खुद नैया सब्द सूं पार होती है – 2
प्रीत जानी जो जीवन है कर्म देखा निज भूलों का
मुख उल्टा जो तुम करलो प्रभु का संग मिलता है –– ना लो सपने ––

ना लो सपने कहीं सपनों से नैया पार होती है – 2
कहीं आंसू बहाने से दुखों का नाश होता है – 2

–0–

भजन 30 (भाग 1)

सतनाम जपा कर भाई तेरी बिगड़ी बात बन जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

1 स्याही गई सफेदी आई अब क्या करेगा भाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

2 नाम जपन को बड़ो आलसी तुम्हारी मति गई बहुराई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

3 योवन दौलत माल खज़ाना कुछ भी अंत साथ ना जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

4 हम ध्यानी काया संग चले माया भी संग जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

5 इस माया ने सब को खाया मन ने मति भरमाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
6 भाई बंधू कटुंभ कबीला संग ना एको जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
7 ये माया सब झूठी छाया हंस अकेला जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
8 कमाल तारयो कमाली तारयो तारयो सदना कसाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

सतनाम जपा कर भाई तेरी बिगड़ी बात बन जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

–0–

भजन 31 (भाग 2)

सतनाम जपा कर भाई तेरी बिगड़ी बात बन जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

1 कमाल तारयो कमाली तारयो तारयो पलटू भाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
2 संत रे दास ने मीरा तारी सार नाम धुन लाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
3 ऐसी भक्ति करो घट भीतर छोड़ो कपट चतुराई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
4 सेवा स्मिरण और सत्संग सहज मिले सुखदाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
5 सार नाम सुरति में डालो सतगुरू युक्ति बताई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
6 ये संसार झूठ भरम है अंदर ध्यान से पाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
7 सार नाम निज औषधि कौटि विकार कट जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

सतनाम जपा कर भाई तेरी बिगड़ी बात बन जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

–0–

भजन 32 (भाग 3)

सतनाम जपा कर भाई तेरी बिगड़ी बात बन जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

1 सुरत सब्द में जो जन जाए मौक्ष पद मिल जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
2 काल कराल निकट नहीं आवे काम क्रौध मिट जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
3 युगन युगन की तृष्णा मिटानी कर्म भर्म टरी जानी – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
4 यह संसार है काल का देशा मन की सब चतुराई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
5 सार नाम है दौलत ऐसी आत्म हंस बन जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
6 कहे कबीर सुनो भाई साधो अमर होई घर जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2
7 अमरलौक है सब हंसों का कबहु ना मरही पाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

सतनाम जपा कर भाई तेरी बिगड़ी बात बन जाई – 2
सतनाम जपा कर भाई तेरा हंस रूप बन जाई – 2

–0–

भजन 33

ओ मेरे साहिबा तुम तो हो रहते मेरे प्राण में – 2
तुम बिन झूठा जग है दुख ही दुख हैं इस जहान में – 2
तुम जब आओ सुरति जगाओ बने हम सुरति धार
हम्हें क्या मिल गया रे – 2

1 प्रेम प्याला पी कर मन को दिया है हमने दान में – 2
मेहर तुम्हारी ऐसी – जीवन में पाया सच्चा नाम रे – 2
सत्त को पाया ध्यान लगाया मन हुआ बेहाल
हम्हें सब मिल गया रे – 2

2 सतनाम जानो प्यारे जीवन है नाता बिन नाम रे – 2
मानस तन पाकर भी – व्यर्थ गंवाया बिन नाम रे – 2
गुरू को पाकर सुरति में ध्या कर माया से पाओ पार
हम्हें सब मिल गया रे – 2

3 सोते को जीवन जाने ये तो है धोखा बिन नाम रे – 2
सांस जो जीवन लेता – व्यर्थ ही जाता बिन नाम रे – 2
अंदर जाकर राम जगा ले जागे सुरति ध्यान
हम्हें सब मिल गया रे – 2

4 दुनियां ये माया धोखा आंखों में पड़ी गहरी धूल रे – 2
ये जग दर्पण प्यारा – दिखता वही जो तेरा रूप रे – 2
आंखें धोखा वाणी धोखा धोखा ईंद्र जाल
हम्हें सब मिल गया रे – 2

5 ये जग धोखा सारा काल ने रचयो माया जाल रे – 2
सुख की है तख़्ती लागी – भरमों में डाला हर प्राण रे – 2
बंधन जानों कारण खोजो अंदर करो ध्यान
हम्हें सब मिल गया रे – 2

6 माया के बंधन कारण हंसा ने खोया सच्चा रूप रे – 2
मन माया बंधन कारण धूल में पड़ा सच्चा नूर रे – 2
धूल को जानो उसे हटाओ हंसा करो आज़ाद
हम्हें सब मिल गया रे – 2

7 सतनाम जाने बिन काल का छूटे नहीं देस रे – 2
सोह्म को जाने बिन ज्ञानी ना होता कोई साद रे – 2
आत्म जानो सतगुरू पाओ पाओ सच्ची दात
हम्हें सब मिल गया रे – 2

8 जब तक है नाता जग से जीवन को जानो इक रोग रे – 2
तीर्थ व्रत और पूजा मन का ही जानो झूठा रोग रे – 2
नाता तोड़ो सच्च को जानो मन का तोड़ो जाल
हम्हें सब मिल गया रे – 2

9 ओ सोने वालो जागो जीवन ये तेरा अनमोल रे – 2
एक पुरूष है प्यारा सब घट वही सच्चा नूर रे – 2
साहिब को जानो जोत जगाओ पल में पहुंचो पार
हम्हें सब मिल गया रे – 2

10 सतलौक है देस प्यारा संतों का देस अनमोल रे – 2
धरती आकाश बिन वे काल के बिन प्यारा देस रे – 2
काल को जानो सतगुरू पाओ हो जाओ उस पार
हम्हें सब मिल गया रे – 2

ओ मेरे साहिबा तुम तो हो रहते मेरे प्राण में – 2
तुम बिन झूठा जग है दुख ही दुख हैं इस जहान में – 2
तुम जब आओ सुरति जगाओ बने हम सुरति धार
हम्हें क्या मिल गया रे – 2

—0—

भजन 34

सार नाम की अमृत वर्षा संत बिखेरें गली गली – 2
ले लो रे भाई ले लो रे 'वे नाम जी' को दात मिली

1 बालपन सब खेल गंवायो – जवानी में धन मान को पायो
वृद्ध भयो तन कांपन लगयो – सार सब्द की दात ना पाई
देवी देवों से मांग मांग कर – फिर पुनः खाक सूं खाक मिली

ले लो रे भाई ले लो रे 'वे नाम जी' को दात मिली

2 काल जाल तीन लौक में आकर – हर जन है मन वश में पड़ा
जोड़ी जोडी़ धन बहुत बटेरा – तो भी दुख में रहा पड़ा
बिन सतगुरू कोई नहीं है तेरा – जिससे सच्ची प्रीत मिले
ले लो रे भाई ले लो रे 'वे नाम जी' को दात मिली

3 जिस को तूं है डूंढ रहा – वो तो सतगुरू वश में पड़ा
जो गुरू पूर्ण शरणी आवे – पल पल आवे संग पड़ा
सतगुरू सूं प्रीत बड़ा लो – जिस को साहिब सूं सुरति मिली
ले लो रे भाई ले लो रे – 'वे नाम जी' को दात मिली

4 ना तीर्थ में ना मूरत में – ना वो एंकात निवास में
ना मंदिर में ना मस्जिद में – ना काबा कैलाश में
कुछ ना रही कमी जब – तुमको सच्ची दात मिली
ले लो रे भाई ले लो रे – 'वे नाम जी' को दात मिली

5 ना वह क्रिया क्रम में रहता – नांहि योग सन्यास में
नां ही प्राण प्रिण्ड में रहता – ना ब्राहमाण्ड आकाश में
ऐसी नगरिया में कंई विधी रहता – नित उठ केवल नींद मिली
ले लो रे भाई ले लो रे – 'वे नाम जी' को दात मिली

6 ना वह भृकुटि भंवर गुफा में रहता ना वो सुन्न आकाश में
खोजी होए तुरंत मिल जाए पूर्ण सतगुरू पास में
जो जीव सतगुरू को पाए जाने सच्ची राह मिली
ले लो रे भाई ले लो रे 'वे नाम जी' को दात मिली

7 तूं कहां डूंढे बंदे साहिब को वह सब श्वांसों के श्वांस में
कहे कबीर सुनो भाई साधो वह रहते तेरे विशवास में
सतगुरू के हो जाओ तो जानो निजघर की कुण्झी मिली
ले लो रे भाई ले लो रे 'वे नाम जी' को दात मिली

8 तृष्णा से मुख को तुम मोड़ो माया में मन मत तुम जोड़ो
निज नेक कमाई खाओ दीन दुखी को गले लगाओ
बृहंगा मत सतगुरू से पाकर सुरति उठ निजधाम चली
ले लो रे भाई ले लो रे 'वे नाम जी' को दात मिली

सार नाम की अमृत वर्षा संत बिखेरें गली गली – 2
ले लो रे भाई ले लो रे 'वे नाम जी' को दात मिली

—0—

भजन 35

लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2
लो सुनो प्यारे जग वासियो – 2

1 जो मिटते हैं सब पाते हैं – 2 बिन मिटे भटकते रहते हैं – 2
हर बीज खाक में मिटता है – 2 और मिट कर ही खिल पाता है – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

2 खिलने से फल को पाते हैं – 2 औरों की भूख मिटाते हैं – 2
समर्पण होना जग धान बड़ा – 2 वो पूर्ण प्यार को पाते हैं – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

3 ये सच्ची प्रीत सुरति दर्पण हैं – 2 औरों की प्यास जगाती है – 2
बूंद जब खुद को समर्पण करती है – 2 सागर में सागर हो जाती है – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

4 इक मानुष ऐसा प्राणी है – 2 जो मिटने से घबराता है – 2
बिन मिटे बीज वृक्ष कैसे हो – 2 जो जीवन सफल कर जाता है – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

5 बिन मिटे मेल ना हो सके – 2 बिन मिले मौक्ष कैसे पाओगे – 2
बिन मिटे बूंद कैसे सागर हो – 2 और आत्म कैसे हंसा हो – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

6 जो मिट कर तन को तजते हैं– 2 वह हंस रूप बन जाते हैं – 2
सार नाम दात में प्राण धरो – 2 वो साहिब संग निजघर जाता है – 2
वो जन्म मरण से छुट जाते हैं – 2 फिर कभी ना गर्भ में आते हैं – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

7 बिन तड़प मेल ना हो सके – 2 बिन तड़प विरह ना जाग सके – 2
बिन विरह प्रेम ना जाग सके – 2 बिन प्रेम आत्म कैसे हंसा हो – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

8 श्रद्धा विशवास संग जोड़ती है – 2 सतगुरू सूं आत्म हंसा हो – 2
सत्त में जब सत्त समाता है – 2 फिर अमर जौत बन जाता है – 2
तीन सत्य जब एक हों – 2 फिर सत्त में सत्त समाता है – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

9 मैनें चलकर है देख लिया – 2 इस हद आगे बे हद जो है – 2
वो जौत सरूप निज साहिब हैं – 2 हम हंसों का सच्चा प्यार वही – 2
लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2

लो सुनो जगत के वासियो – 2 कंई जन्मों से बिछड़े हंस साथियो – 2
लो सुनो प्यारे जग वासियो – 2

—0—

भजन 36 (भाग 1)

सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

1 दुनियां सुने या ना सुने – 2 पर तुम करो ध्यान
वाणी को तुम सुधार लो – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2
2 दृष्टि् में तेरी धूल है – 2 इस को सुधार ले
सार सब्द की दात ले – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2
3 विषयों की तीव्र आग में – 2 खोता ही जा रहा
आदत बुरी सुधार लो – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2
4 जाना है तुम को एक दिन – 2 इस तन को छोड़ कर
ये सच्चा राज़ जान ले – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2
5 रिश्तों में मोह त्याग कर – 2 संतों से कर ले प्रीत
इतना ही सुरति ध्यान दो – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2
6 ये काल जाल का लौक है – 2 सच को तूं जान ले
मन की तरंग मार दे – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

—0—

भजन 37 (भाग 2)

सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

1 कंई जन्मों से सोया पड़ा – 2 संतों से जान ले
भक्ति का राज़ जान ले – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

2 आत्म में तेरी धूल है – 2 मन माया के रूप में
सुरति से मन को साध लो – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

3 जीव पड़ा बहु लूट में – 2 ये बात जान ले
सतगुरू को जे तूं जान ले – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

4 मन माया तो एक हैं – 2 आत्म है वश पड़ी
सुरति से इस को थाम ले – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

5 अमृत सब्द सुरति मिले – 2 काटे कर्म क्लेश
सुरति से गाओ नाम को – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

6 अमरपुर से सुरति चले – 2 हंसा बनोगे तुम
मुक्ति का राज़ जान लो – 2 बस हो गया भजन
सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

सुरति से मन को जान लो बस हो गया भजन – 2

–0–

भजन 38 (भाग 1)

सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2
सतगुरू की शरणी में तुम आया करो सभी – 2

1 आठों पहर सोने में जाते हैं तुम्हारे – 2
ईक पल को सच्ची राह पर आया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2

2 आखिर को तन खाक में मिलेगा तुम्हारा – 2
तुम भी तो इसी राज़ को जाना करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

3 आखिर को ये संसार छूट जाएगा तुमसे – 2
कर्म काण्ड खुद से दूर भगाया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

4 हर ढंग अपनाया तुमने धन को पाने का – 2
कुछ देने को तुम हाथ उठाया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

5 जब तक सुरति से बन सके तब तक करो दया – 2
सच्चे साहिब सूं सुरति लगाया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

6 तृष्णा तुम्हारी कर रही प्रभुता से अपना राज़ – 2
सन्तोष भी सुरति में तुम लाया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

7 माया के वश में पड़के जो रहते हो मदहोश – 2
मन को भी सुरति से सुलाया करो कभी – 2
संतों के सत्संग मे आया करो कभी – 2

सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2
सतगुरू की शरणी में तुम आया करो सभी – 2

—0—

भजन 39 (भाग 2)

सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2
सतगुरू की शरणी में तुम आया करो सभी – 2

1 स्वार्थ के लिए तुम फिरते हो भटकते – 2
किसी को भी सच्ची राह दिखाया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

2 संतों से जानो सुरति तुम मन से ना करो ध्यान – 2
यही तो भक्ति मूल है जान लो सभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

3 मन वाणी से पार है साहिब सब्द स्वरूप – 2
सार नाम सतगुरू दिया तुम जान लो सभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

4 नहीं वियोग तीन काल में साहिब योग है योग – 2
सुरतकमल श्री गुरू चरण ध्याया करो सभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

5 जो जा चुके जहान से ध्याया ना करो तुम – 2
कुछ भी ना उनसे मांगना फंस जाओगे सभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

6 है हित में तुम्हारे ही भ्रम ना करो तुम – 2
अंहकार को ना सुरति में लाया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2

सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2
सतगुरू की शरणी में तुम आया करो सभी – 2

—0—

भजन 40 (भाग 3)

सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2
सतगुरू की शरणी में तुम आया करो सभी – 2

1 ये काल जाल तीन लौक हैं समझा करो कभी – 2
जात पात के चक्र में फंस जाओगे सभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

2 देवी देव निरंकार प्रभु ध्याया ना करो तुम – 2
ये तीन लौक माया खड़ी जान लो सभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

3 हत्या कभी ना छूटती समझा करो सभी – 2
इस को ना अपनी सुरति में लाया करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

4 उम्रे दराज़ मांग कर लाए थे चार दिन – 2
दो आरजू में कट गये दो इन्तज़ार में – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

5 मांसाहारी मानवा प्रत्यक्ष राक्षस जान – 2
इसकी संगत बने बंधन ये जान लो सभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

6 है हित में तुम्हारे लिए कहना कबीर का – 2
सतनाम ना अपनी सुरति से निकाला करो कभी – 2
सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी –

सतनाम को सुरति से तुम ध्याया करो सभी – 2
सतगुरू की शरणी में तुम आया करो सभी – 2

–0–

भजन 41 (भाग 1)

सार नाम सुरति सूं ध्याया करो सभी गाया करो सभी – 2
संतों की शरणी में तुम आया करो कभी आया करो सभी – 2

1 कौटिन जन्मों का लेखा कटता ना तुमरा – 2
इस राज़ को संतों से जाना करो सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

2 चौरासी फंसी आत्मां काल जाल पसारा – 2
स्वर्ग पाताल मृत्यू खण्ड जाल जाना करो कभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

3 हरि हर ब्रह्मा प्रकटायो तीनों कियो बेहाल – 2
कर्म धर्म तीर्थ व्रत आदि जाना करो सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

4 जारी जारी भस्मों करी और फिरी लेवे अवतार – 2
आवागमण रखे उलजाई भाव जाना करो कभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

5 सतगुरू सब्द बिना चीने कैसे उतरोगे पार – 2
माया फांस फंसाया पार उतरो ना तुम कभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

6 सतपुरूष का अमरलौक ताको मूंदो द्वारो – 2
सुश्मिणा मध्य बसे निरंझन जान लो सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

7 नेम धर्म आचार यज्ञ तप ये झूठे व्योवहार – 2
ये सब बंधन काल के समझा करो सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

सार नाम सुरति सूं ध्याया करो सभी गाया करो सभी – 2
संतों की शरणी में तुम आया करो कभी आया करो सभी – 2

—0—

भजन 42 (भाग 2)

सार नाम सुरति सूं ध्याया करो सभी गाया करो सभी – 2
संतों की शरणी में तुम आया करो कभी आया करो सभी – 2

1 जा से मिले आखण्ड मौक्ष सो मार्ग है प्यारा – 2
संतों से मिले दात ये समझा करो कभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

2 काल जाल से बचना चाहो गाओ सब्द तत्कारा – 2
बिन मूल सब्द कुछ नांहि जग जान लो सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

3 कहे कबीर अमर करि राखे जो निज संत प्यारा – 2
उसके चरणों में सर धरि मौक्ष पा लो सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

4 कौटि कर्म के कारने मन माया औंकार – 2
आठ अरब चौंसठ करोड़ साल तक फंस जाओगे सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

5 पाप कर्म करि सुख चाहे यह कैसे निबे ही – 2
नित सतनाम भजना व्यर्थ जाए ना कभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

6 दिन दिन सुनत नाद जब निकसें काया कंपत शरीर – 2
ब्रह्म–नन्द लीन मन होवे समझा करो कभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

7 दिन दिन सुनत नाद धुणि होवे मन मलीन – 2
ब्रह्मा ज्योति घर में दर्शावे बिसरे काया सुध सभी – 2
सार नाम सुरति सूं ———

सार नाम सुरति सूं ध्याया करो सभी गाया करो सभी – 2
संतों की शरणी में तुम आया करो कभी आया करो सभी – 2

–0–

भजन 43

सुनो संत प्यारे यह विनती हमारी के हम को निकालो इस झूठे जहां से – 2

1 यह संसार सारा सोया हुआ है पता नहीं किस में खोया है – 2
यह करता नशा है झूठ में बह कर के झूठे जहां में खोया पड़ा है
सुनो संत प्यारे ———

2 यह झूठे सपने पल पल है लेता के हर पल उन्हीं में सोया पड़ा है – 2
किसी को किसी से मुहब्बत नहीं है के हर कोई भागे किधर जा रहा है
सुनो संत प्यारे ———

3 कंई जन्मों से तूने कर्म किए हैं के हर जन्म तेरी भूख बड़ी है – 2
तुझे कल की चिंता सताती है रहती के तूं इस चिंता सूं दुखी हो रहा है
सुनो संत प्यारे ———

4 वासना तेरी का कोई अंत नहीं है के भर भर के भी ये खाली पड़ी है – 2
लाखों जन्म से तूं इसे भर रहा है बिन पैंदे यह बही जा रही है
सुनो संत प्यारे ———

5 जिसको भी देखो वही पी रहा है के हर वस्तू सूं वह नशा कर रहा है – 2
कोई पी रहा है लहु आदमी का कोई किसी को भटका रहा है
सुनो संत प्यारे ———

6 किसी को किसी सूं प्यार नहीं है के प्यार की भाषा का पता ही नहीं है – 2
पद और प्रतिष्ठा नशा ही नशा है के हर कोई इस में जला जा रहा है
सुनो संत प्यारे ———

7 भय के कारण श्रद्धा कर रहा है के झूठी श्रद्धा सूं भटक रहा है – 2
सोचो विचारो अनुभव को पाओ अनुभव की छाया में इसे संग पाओ
सुनो संत प्यारे ———

8 झूठी श्रद्धा किसी काम की नांहि यह तो है किस्ती बिन मांझी के भाई – 2
श्रद्धा तो है खुशबू फूल का खिलना सुरति में जाओ तो खुशबू है मिलती
सुनो संत प्यारे ———

9 सत्य से पहले श्रद्धा ही है संगी जो सत्य की छाया बन लाती है सुरति – 2
रोग जब जाता जीव स्वस्थ कहलाता सार सब्द सूं मन खो ही जाता
सुनो संत प्यारे ———

10 आनंद से पहले सत्य हो जाओ कि सत्य से ही अपनी जौत जगाओ – 2
सत्य समाने से आत्म हंसा कहलाता के सतगुरू संग निज घर है जाती
सुनो संत प्यारे ———

सुनो संत प्यारे यह विनती हमारी के हम को निकालो इस झूठे जहां से – 2

—0—

भजन 44

अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2

1 सत्य अमर लौक की ज्योति है – 2 जो अनादि अनंत असीम है – 2
सतगुरू द्वार सत्य पाने को – 2 आत्म हंसा जब हो जावे – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2
2 तुम सतगुरू सूं सत्त को जानो – 2 बिन सत्य के सत्य का भेद कहां – 2
आंखे खुले तो द्वार खुले – 2 बिन द्वार साहिब दीदार कहां – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2
3 सत्य कहीं बाहिर नहीं पा सको – 2 वह तो बस तेरे अंदर है – 2
तुम हर पल संतन ध्यान धरो – 2 वह ही तो मौक्ष द्वारा है – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2
4 जो बाहर में सत्य छान रहे – 2 वह ही जन सत्य खो जाते हैं – 2
तेरा तन मन झूठ पसारा है – 2 इसी सूं हर जन हारा है – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2
5 जो जग में ज्ञानी कहलाते हैं – 2 मूल सब्द सूं वंचित रहते हैं – 2
संतन संग सरल और सुरति वान बनो – 2 जो सांसों में सुरति डाल सको – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2
6 वह पल पल झुकते जाते हैं – 2 जो सत्य ओर कदम बड़ाते हैं – 2
जब मन तरंग मिट जाती है – 2 तुम केवल सत्य कहलाते हो – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2
7 उन का कल और कल छुट जाता है – 2 और मन चंचल खो जाता है – 2
उन की हौमां छूट जाती है – 2 और केवल शांति रह जाती है – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2

8 अब केवल प्रेम की जोत बची – 2 जो अमर जौत बन जाती है – 2
अब सुरत कमल निज वासा है – 2 जग सूं टूटा अब नाता है – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2

9 अब कुछ भी शेष कार्य नहीं – 2 आत्म हंसा कहलाती है – 2
अब बूंद सिंधु समाने को – 2 संग साहिब के निज धाम चली – 2
अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2

अब जागो सोये हंस साथियो – 2 कंई जन्मों से भटके साथियो – 2

—0—

भजन 45

तेरे अंदर अमृत की धारा तेरे अंदर मौक्ष द्वारा

1 तेरे अंदर सात हैं सागर तेरे अंदर बाईस लाख तारे
2 तेरे अंदर पंच तत्व निवासा तेरे अंदर निरंकार मन रूपी समाया
3 तेरे अंदर शिव विष्णू ब्रह्मा तेरे अंदर आद शक्ति निवासा
4 तेरे अंदर तेतीस करोड़ देवी देवों का वासा
5 तेरे अंदर है सुन्न विस्तारा तेरे अंदर है ज्ञान भण्डारा
6 तेरे अंदर अनंत जोत प्रकाश तेरे अंदर मन तरंग का सागर
7 तेरे अंदर विरह तड़प पसारा तेरे अंदर सतगुरू प्यारा
8 तेरे अंदर प्रीत प्रेम की बहे धारा तेरे अंदर सत्य पसारा
9 तेरे अंदर बहे सुरति की धारा तेरे अंदर जीवन ज्योति पसारा
10 तेरे अंदर शाश्वत की धारा तेरे अंदर सतलौक पसारा
11 तेरे अंदर राम का वासा तेरे अंदर अमरलौक हंसा का देसा
12 तेरे अंदर अमर जोत समाई तेरे अंदर सतपुरूष समाया
13 तेरे अंदर सच्चे संत का वासा वोहि है पूर्ण मौक्ष विधाता

तेरे अंदर अमृत की धारा तेरे अंदर मौक्ष द्वारा

—0—

भजन 46

ये माला है नाम की सुरति से पहनी जाए
सतगुरू शरणी में जा के ही इस दात को पाए

1 ये माला है नाम की सुरति से पहनी जाए
हंसा माला प्रेम की पहनो धुन लगाए
2 प्रेम घर अति दूर है बिरला ही कोई पाए
जीते जी जो मर गया पूरा हो के पाए
3 पूरा होई जो मरे भौर ना मरना होए
बार बार जग आ रहा कुछ संग लिया ना जाए
4 सुरत कमल में ध्यान धरे जीवत ही मर जाए
धूं धूं धुन में ध्यान धरा तो फिर वापिस आ जाए
5 खुद ही तूं है आ रहा कर्म का जाल फैलाए
कर्म काट गुरू सब्द से संतन शरणी आए
6 सार नाम हृदय धरो कर्म जाल कट जाए
आशा तृष्णा सब गई शेष ना कुछ रह जाए
7 काम क्रौध मद लौभ पद इनसे है संसार
सार सब्द निज औषधि काटे कौटि कौटि विकार

ये माला है नाम की सुरति से पहनी जाए
सतगुरू शरणी में जा के ही इस दात को पाए

—0—

भजन 47

ओ सतगुरू साहिब प्यारे – सतपुरूष की आंख के तारे

1 इस संसार के पांच रंगों से दुनियां तूने सजाई – 2
हंसा के संग तन मन देकर सुरति की होश भुलाई
जा देखी तेरी खुदाई —— ओ – ओ– ओ–
बिसर गई निज घर की सुरति दुखों ने डाला ढेरा
ओ सतगुरू साहिब ——

2 सत्त को ना चाहे सोया मनवा असत्त ने घेरा डाला – 2
हंसा चाहे प्रेम की ज्योति 'मै' ने डाला घेरा
सतगुरू ही तोड़ें घेरा –– ओ – ओ – ओ –
सुरति निरति मिल जाती जब मन माया के खुलते ताले
ओ सतगुरू साहिब ––

3 प्रेम हवश सुख दुख मध्य रहकर सुरति की ज्योत जगाओ – 2
सत्त आए असत्त खो जाए सत्त की ज्योत जगमगाए
सतगुरू सूं सुरति मिलाए –– ओ – ओ – ओ –
ज्योत जगे अंधेरा मिट जाए सतगुरू ही पार लगाए
ओ सतगुरू साहिब ––

4 सुरति रहस्य से हम भरे हैं जीवन सुरति हो जाए – 2
सिद्धांत हाथ में जब आते हैं प्रेम रहस्य खो जाए
सार सुरति ही प्रेम जगाए –– ओ – ओ – ओ –
सुरति जगे प्रेम ज्योत बन जाए हर ओर साहिब संग पांए
ओ सतगुरू साहिब ––

ओ सतगुरू साहिब प्यारे – सतपुरूष की आंख के तारे

–0–

भजन 48 (भाग 1)

सुनो मेरे प्यारो ये मन जो तुम्हारा पल पल सभी को भरमा रहा है
अतीत आंसू है देता कल प्यारे सपने दिए जा रहा है

1 कल जो बीता कुछ भी ना पाया के सारे का सारा धूल हो गया है – 2
आने वाले कल में सपने सुहाने वो भी आज होकर धूल बनेगा
सुनो मेरे प्यारो –––

2 यह जीवन नहीं जो बाहर ही बहता के अंदर का तुझ को पता ही नहीं है – 2
कंई जन्मों से भटके खुद को ना जाना के ये ही तुम्हारी भूल बड़ी है
सुनो मेरे प्यारो –––

3 जो आगे ना बड़ते पीछे सरकते कि कुछ भी जहां में ठहरा नहीं है – 2
जो भी हो पाते आसार तुम जानो के सच को पाना सार यही है
सुनो मेरे प्यारो –––

4 सार सब्द सूं अंदर जगमगाता सतगुरू पाओ तो दात है मिलती – 2
कली सूं जब ही फूल है खिलता के खुशबू से उस की भेद है मिलता
सुनो मेरे प्यारो ———

5 सार सब्द औषधि ऐसी के झूठे जीवन को सच है बनाती – 2
सच जब आता मन खो जाता प्रेम सूं अपनी खुशबू लुटाता
सुनो मेरे प्यारो ———

6 बीज समान तुम जग में आए के सच सूं तुमको फूल है बनना – 2
श्रद्धा जब आती फूल खिल जाते के लाखों जन उसकी खुशबू हैं पाते
सुनो मेरे प्यारो ———

7 तुम्हारी चदरिया स्वच्छ हो जाती के पहले से ज्यादा वह खिल–खिल जाती – 2
जब यह चदरिया निज घर जाती सभी हंसों को यह अति लुभाती
के सतपुरूष वह अंग बन जाती —— सुनो मेरे प्यारो ———

सुनो मेरे प्यारो ये मन जो तुम्हारा पल पल सभी को भरमा रहा है
अतीत आंसू है देता कल प्यारे सपने दिए जा रहा है

–0–

भजन 49 (भाग 2)

सुनो मेरे प्यारो ये मन जो तुम्हारा पल पल सभी को भरमा रहा है
अतीत आंसू है देता कल प्यारे सपने दिए जा रहा है

1 ज्ञान–दीपक को सुरति की बाती बनाओ
जो संतों की सुरति में समाया हुआ है
सुनो मेरे प्यारो ———

2 ज्ञान–दीपक है प्रकाश न्यारा जो भीतर भवन में जगमगा रहा है – 2
तहां बैठ पुरूष को सिमरो प्यारे के पल में तुझे वह पार करेंगे
सुनो मेरे प्यारे ———

3 सो जन जानो सब तें उंचा सांसो में जिसके सब्द बसा है – 2
यही विधि जो जन भजन है करता तीन लौक सूं पार वही है
सुनो मेरे प्यारो ——

4 पुरूष नाम से ही परिचय होई सब भेषन में संत हैं सोई –
ताकि महिमां अगम अपारा लौक वेद पुराण तज भयो न्यारा
सुनो मेरे प्यारो ———

5 अचल पुरूष का अचल है देशा आदि नाम सूं होए परवेशा – 2
सार सब्द हे भक्ति का मूला जब छूटे निजधाम परवेशा
सुनो मेरे प्यारो ———

6 भक्ति करो भरमो नहीं सोई भक्ति प्रमाण – 2
पुरूष नाम निस दिन भजो सब्द की महिमां तूं जान
सुनो मेरे प्यारो ———

7 अक्का नाम निज पाइया जाही सूं भव जग जीत – 2
इनसे भक्ति गुप्त है सुरति सूं मन जग जीत
सुनो मेरे प्यारो ———

सुनो मेरे प्यारो ये मन जो तुम्हारा पल पल सभी को भरमा रहा है
अतीत आंसू है देता कल प्यारे सपने दिए जा रहा है

—0—

भजन 50

क्यूं भटकते फिर रहे हो – ले लो तुम सत का पता – 2
ये तो कह जाते जगत को – ये तो जीवन मृत्यू सा – 2

1 मुझको तुम अपना समझ कर – जीवन का मतलब जान लो – 2
अपने तो बंधन गये – जग सूं रिश्ते खो गये – 2
हंसा रूप में खुद को पाया – सत सब्द की दात सूं – 2
ये तो कह जाते जगत को —— क्यूं भटकते फिर ——

2 भय प्रलोभन छोड़ने से –निज का तुम ले लो पता – 2
'मैं हूं' तो सुरति में खोये – तुझ को निज घर ना मिला – 2
एक बार आवाज़ देते – ये तो कुछ मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को —— क्यूं भटकते फिर ——

3 दुख में रहकर जन्म पाते – सुख की ना आवाज़ दी – 2
'वे हूं' तो निज घर में गये थे – बस उसी की याद थी – 2
एक बार तुम जाग जाते – ये तो कुछ मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को —— क्यूं भटकते फिर ——

4 सोते सोते जन्म काटे – खुद की ना पहचान की – 2
'वे हूं' तो जग को देख रहे थे – मोत पल पल साथ थी – 2
एक बार तुम होश करते – ये तो कुछ मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को –– क्यूं भटकते फिर ––

5 परम पुरूष सूं दात पाकर – 'वे हूं' ने आ–आवाज़ दी – 2
'वे हूं' तो हंसा रूप में थे – मूल सुरति साथ थी – 2
एक बार जीवन को पाते – ये तो कुछ मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को –– क्यूं भटकते फिर ––

6 सत सब्द की दात पाकर – 'वे हूं' ने उसकी बात की – 2
'वे हूं' तो साहिबन संग खड़े थे – बस उन्हीं की याद थी – 2
एक बार इस पल में रहते – ये तो कुछ मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को –– क्यूं भटकते फिर ––

7 सच्चा सौदा 'वे हूं' ने पाकर – जागो की आवाज़ दी – 2
'वे हूं' प्रीत सूं कह रहे थे – जिस की खुशबू साथ थी – 2
एक बार श्रद्धा सूं मिलते – ये तो कुछ मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को –– क्यूं भटकते फिर ––

8 'मैं' की ज्योति को भुजाते – परम ज्योति पास थी – 2
जग तो अपनी 'मैं' में खुश था – सुख की ना आवाज़ दी – 2
एक बार सुरति में जाते – ये तो कुछ मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को –– क्यूं भटकते फिर ––

9 जिस को तुम बस्ती हो कहते – वो तो इक मरघट सा है – 2
हर कोई ईक लाश सा है – जिस में केवल प्राण हैं – 2
एक बार सत्त दात पाते – जागना मुश्किल ना था – 2
ये तो कह जाते जगत को –– क्यूं भटकते फिर ––

क्यूं भटकते फिर रहे हो – ले लो तुम सत का पता – 2
ये तो कह जाते जगत को – ये तो जीवन मृत्यू सा – 2

—0—

भजन 51 (भाग 1)

——— साधकगण ———

ओ मेरे साहिबा – हम हैं तुम्हारे बिन किनारे – 2
तुझ बिन ना दूजा कोई – आत्म को हंसा करी डारे – 2
ओ मेरे साहिबा ———

1 कंई जन्म से बिछड़े तुझसे – भटके हुए हैं तेरे प्यारे – 2
हम भी तो तेरे अंग हैं – हंसा रूप दिया तूने प्यारे – 2
ओ मेरे साहिबा ———

2 भूले पड़े हैं जग में – काल जाल फंसे जीव सारे – 2
कोई ना सच्चा साथी – कोई ना सुरति सूं पुकारे – 2
ओ मेरे साहिबा ———

3 जब से हैं बिछड़े तुझसे – दुख ही दुख जग सारे – 2
भाग दौड़ ऐसी लागी – माया पीछे लगे सोए सारे – 2
ओ मेरे साहिबा ———

4 मन भरमाया सबको छोड़ा सब कर्मों के सहारे – 2
सुद्ध बुद्ध ऐसी खोई भरमों में पड़े हैं हंसा सारे – 2
ओ मेरे साहिबा ———

5 मन जाल ऐसा फैला भटके पड़े हैं हंसा सारे – 2
मृत्यू जाल ऐसा फैला माया में डूबे लौभी सारे – 2
ओ मेरे साहिबा ———

ओ मेरे साहिबा – हम हैं तुम्हारे बिन किनारे – 2
तुझ बिन ना दूजा कोई – आत्म को हंसा करी डारे – 2
ओ मेरे साहिबा ———

—0—

भजन 52 (भाग 2)

———सतपुरूष ———

ओ मेरे प्यारे हंसा – आंखों के तारे दुलारे – 2
आजा रे आजा हंसा – संतों से पाले मौक्ष प्यारे – 2

1 सुनो मेरे प्यारे हंसा – मन संग किया तूने प्यार रे – 2
छोड़ दे माया लौभी – जिस मूंदा हुआ सतलौक द्वार रे – 2
ओ मेरे प्यारे हंसा ———

2 सांसों का ले लो सहारा – निरति में डालो विरह धारा – 2
अपनी हौमां तज लो तुम – संत चरणों का ले लो सहारा – 2
ओ मेरे प्यारे हंसा ———

3 सार सब्द वासा मेरा – काटे ये मन माया जाल रे – 2
सार नाम सुरति डालो – पल में खुल जांए सब किवाड़ रे – 2
ओ मेरे प्यारे हंसा ———

4 सहज मार्ग मेरे हंसा – सहज को चीनों मेरे प्यारे – 2
सहज से सहज मिलता – सहज कहावे घर को जावे – 2
ओ मेरे प्यारे हंसा ———

5 नाम बिन नहीं निस्तारा – ज्ञान कहुं में हंसा प्यारे – 2
नाम कुण्झी पाई सतगुरू – पल में खुले मन ताल रे – 2
ओ मेरे प्यारे हंसा ———

6 मन माया छूटे तुम सूं – सतगुरू हंसा करी डारे – 2
सुरत कमल में आजा – निज घर लांऊ संग प्यारे – 2
ओ मेरे प्यारे हंसा ———

ओ मेरे प्यारे हंसा आंखों के तारे दुलारे – 2
आजा रे आजा हंसा संतों से पाले मौक्ष प्यारे – 2

—0—

भजन 53

कुछ ऐसी करनी कर प्यारे हीरा जन्म ना बारम्बार मिले – 2
मन माया सूं कंई बार मिले पूर्ण सतगुरू ना बारम्बार मिले – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

1 तूने हर वस्तू से प्यार किया – पर सच्चे कार्य को भूल गये – 2
किया प्यार ना साहिबन प्यारे से – जो वचन दिया था प्यारे को – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

2 तुम लाखों जन्म से बिछड़े हो – उस परमपुरूष प्यारे सूं – 2
वह तो हर सांस में रहते हैं – सार सब्द पाने की देरी है – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

3 हर जन्म में तूने कौल किया – मैं मिलूंगा संत प्यारे सूं – 2
साहिबन (संतन संत) सुरति लिए बैठे हैं –इक बार जे आकर झुक जाओ– 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

4 मन माया के कारण बिछड़े हो – सतलौक परम प्यारे सूं – 2
सुरति जहाज ही तार सके – पाओ दात ये संत प्यारे सूं – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

5 बेहोशी के कारण बिछड़े हो – उस परमपुरूष प्यारे सूं – 2
सत्त की नैया से पार चलो – जो चलती सुरति धारा से – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

6 लौभ हौमा हैं कारण बंधन के – निज रूप का पाना मुश्किल है – 2
अंदर की ज्योति जब जगती है – उल्टी सांसा हो जाती है – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

7 सार सब्द बिन निज से बिछड़े हो – जो मिलता सतगुरू प्यारे सूं – 2
ये खाली होने से भरता है – जब सार सुरति में प्राण धरो – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

8 सुबह शाम जो कुछ भी खाते हो – समर्पण ये कितना प्यारा है – 2
ऐसे बूंद सागर सूं प्यार करे – आ मिल जाए सागर प्यारे सूं – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

9 जब साधक में आपा मिट जाए – अब साहिब जी बारम्बार मिले – 2
सागर भी बूंद से प्यार करे – जब बूंद ही सागर हो जाए – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

10 ये उंची घाटी अति प्यारी है – संतन कृपा सूं पार करो – 2
सुरत कमल में प्राण जब रमते हैं – सतपुरूष प्रकट हो जाते हैं – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

कुछ ऐसी करनी कर प्यारे – हीरा जन्म ना बारम्बार मिले – 2
मन माया सूं कंई बार मिले – पूर्ण सतगुरू ना बारम्बार मिले – 2
कुछ ऐसी करनी कर प्यारे ––

–0–

भजन 54

मैने अपनी मैं जला कर – प्रेम की जौत जला दी है – 2
खून हुआ है मन मेरे का – तो ही सुरति जागी है – 2
मैने अपनी मैं –––

1 अमरपुर से हम सब आए – वह ही प्रेम ज्वाला है – 2
अति सुंदर अति प्यारा जलवा – दर्श से अमृत पाते हैं – 2
सार सब्द को पाकर मैने – जानी प्रेम की धारा है
खून हुआ है मन मेरे का –––
2 तीन लौक में मन है राजा – तन मन संग समाया है – 2
अब तुम इतना जान लो प्यारो – आत्म ही प्रेम की धारा है – 2
हंसा मन संग जुड़ गई है – इसी सूं बंधन सारा है
खून हुआ है मन मेरे का –––
3 नानक कबीर रे दास प्यारे – प्रेम की जोत जलाए हैं – 2
सच प्रेम आनंद की ज्योति – वे तो प्रेम के सागर हैं – 2
अति कृपा करी जग में आकर – प्रेम की जोत जगाई है
खून हुआ है मन मेरे का –––
4 पहला प्रेम सतपुरूष सूं सब का – पाकर ही ये जाना है – 2
कोई नहीं बिन आवरण के जग में – जैसे आकाश में बादल हैं – 2
बंटी हुई है हंसा सुरति – बदलियों को ही हटाना है
खून हुआ है मन मेरे का –––

5 प्रेमी प्रेसी खो जाते हैं – केवल प्रेम रह जाता है – 2
सभी प्रेम इस तन से करते – भूले सच्ची धारा है – 2
सच्चे प्रेम की टूटी डौरी – हर ओर अंधेरा है
खून हुआ है मन मेरे का –––

6 सत सुरति सतगुरू सूं पालो – तन मन सूं पार हो जाना है – 2
सुरति जोत प्रेम की धारा – सतपुरूष ही हर थां समाए है – 2
सतगुरू के चरणों मे जाकर – सच्चे प्रेम को जाना है
खून हुआ है मन मेरे का –––

7 बृहंगा सुरति प्रेम की जोती जानो – ये ही पार लगाती है – 2
परमपुरूष सतलौक ही मानो – वे ही प्रकाश फैलाते हैं – 2
हर दम मूल सुरति में रहना – इसी संग निज घर जाना है
खून हुआ है मन मेरे का –––

8 पहला प्रेम कभी ना मिटता – प्राणों का साथ निभाता है – 2
हंसा परमपुरूष की ज्योति – ये सब दास ने जाना है – 2
फिर भी मनवा पीठ किए है – जान के भी अनजाना है
खून हुआ है मन मेरे का –––

मैने अपनी मैं जला कर – प्रेम की जौत जला दी है – 2
खून हुआ है मन मेरे का –तो ही सुरति जागी है – 2
मैने अपनी मैं –––

–0–

भजन 55 (भाग 1)

मन में जो डालो वृति है बनती – जो पल पल तुझको तड़पा रही है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती – कि वो ही हर पल भरमा रही है – 2

1 माया के पिछे तूं भाग रहा है – कि अपना तो तुझको पता ही नहीं है – 2
आशा तृष्णा के सपने लिए जा – कि मन की गहराई का पता ही नहीं है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती –––

2 चार दिन का जीवन फिर होता बिछोड़ा – कि कर्मों का बंधन छूटा नहीं है – 2
जो सत्त को ना पाया तो कुछ भी ना पाया – ये झूठा आवरण सत्त पर पड़ा है –2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती –––

3 जग के ये रिश्ते झूठ ये बंधन – जिन में तूं हर पल सोया पड़ा है – 2
संत को जे पाना कुछ मन में ना डालो – कि हर पल अंदर की जौत जला लो – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ––

4 झूठी श्रद्धा की मंज़िल नहीं – जिसे तूं निज संग लिए चल रहा है – 2
सत सब्द को सुरति में पा लो तो जानो – कि इस में सच्ची श्रद्धा पड़ी है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ––

5 जब तक ना जागन की आदत है बनती – चाह कर भी तुम कभी जाग ना पाओ –2
भौग आदि का त्याग नहीं है – तांहि तुम में झूठ रमा है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ––

6 संसार दुखिया हर जन जग में – सच्चे रोग का तो पता नहीं है – 2
वैर को छोड़ो अवैर हो जाओ – पल ही पल तुम प्रेमी बन जाओ – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ––

7 वैर के जाते प्रेम रह जाता – कि हर पल तुझ सूं प्यार है बहता – 2
सार सब्द से दीप जलाओ – संग संग अपने साहिब को पाओ – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती –––

मन में जो डालो वृति है बनती – जो पल पल तुझको तड़पा रही है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती – कि वो ही हर पल भरमा रही है – 2

–0–

भजन 56 (भाग 2)

मन में जो डालो वृति है बनती – जो पल पल तुझको तड़पा रही है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती – कि वो ही हर पल भरमा रही है – 2

1 रोग की औषधि सत सब्द है – जो पूर्ण संत की शरणी से मिलता – 2
रोग जब जाते प्रेम रह जाता – पल ही पल में मौक्ष को पाता – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती –––

2 अब तुम अपने आप को जानो – बिन अब तेरे कोई संग नहीं है – 2
कंई जन्मों से कैदी हंसा पड़ा है – हंस बन अपने निज घर को जाओ – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती –––

3 निजघर जाना आसान नहीं है – पल पल ये माया भरमा रही है – 2
ऊंची है घाटी बुद्धि से पार है जाना – पर तीन लौक का संग पुराना – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती –––

4 जब तक ना श्रद्धा संग में तेरे – निजघर जाना आसान नहीं है – 2
सतगुरू चरण में सुरति को डालो – के निजघर प्यारा दूर नहीं है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ———

5 सुरत कमल में सुरति ले जाओ – इक छिन में देखो साहिब खड़े हैं – 2
हंसा को पल में निजधाम लेते – के तुझको कुछ भी करना नहीं है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ———

6 पुरूष नाम जेही परिचय होई – सब भेषन में संत हैं सोई – 2
ताकि महिमां अगम अपारा – लौक वेद तज भयो न्यारा – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ———

7 अचल पुरूष का अचल है देशा – आदि नाम सूं होए परवेशा – 2
सार सब्द भक्ति का मूला – तन छूटे निजधाम परवेशा – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती ———

मन में जो डालो वृति है बनती – जो पल पल तुझको तड़पा रही है – 2
बैचेनी तुम्हारी आदत है बनती – कि वो ही हर पल भरमा रही है – 2

—0—

भजन 57

ओ मेरे साहिबा, तुझ बिन ये झूठा संसार रे – 2
तुझ बिन ये जीवन कैसा, सपनों सा लागे संसार रे – 2
ध्यान में रहकर, सुरति में जाओ, संग में सतगुरू पाओ, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
तुझ बिन जीना, तुझ बिन मरना, ये नहीं सच्ची प्रीत, तुम्हें क्या हो गया रे – 2

1 लाखों जन्म से सोया, सोया ही करता सारे काम रे – 2
भांग तमाकू गांजा, मदिरा भी पीता सुबह शाम रे – 2
अण्डा मछली मीट भी खाता, करता झूठा व्योपार, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
ध्यान में रहकर सुरति में जाओ ——

2 माया के सपने तुझको, देते सहारा तेरे मान को – 2
कल और कल में रहता, कैसे जान पाओ मन का जाल रे – 2
जो कुछ पाया, वह है माया, कुछ भी हाथ ना आए, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
ध्यान में रहकर सुरति में जाओ ——

3 मैं हूं प्यासी जग में, प्रीत की जानी नहीं रीत रे – 2
पिया बिन नैनन सूने, बिन देखे ना जाने सच्ची प्रीत रे – 2
पिया मिले तो, हाल वे जाने, जाने दिल की बात, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
ध्यान में रहकर सुरति में जाओ ––

4 मैं हूं हिरणी बनके, तारों से जगमग हुई रात रे – 2
चाँद का योवन देखो, सोयों को सुलावे मीठी नींद रे – 2
यही है धोखा, इस जग अंदर, जानो सच्चा राज़, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
ध्यान में रहकर सुरति में जाओ ––

5 सपने सुहाने तेरे, तुझको भरमाते दिन रात रे – 2
जानें जो तूने अपने, यही सारे धोखे संसार रे – 2
क्यों नहीं जागे, ऐ सोने वाले, कब खोलोगे आँख, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
ध्यान में रहकर सुरति में जाओ ––

6 मन को ना जाना तुमने, सपने दिखाता मज़ेदार रे – 2
दुनियां की दोनों आँखें, सपने बनाती दिन रात रे – 2
अपनी खातिर, महल बनाया, आपे जंगल सोए, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
ध्यान में रहकर सुरति में जाओ ––

7 दुनियां से जोड़ा मन को, मन और माया फंसी जान रे – 2
तरना तो सभी चाहते, विरला ही होता कोई पार रे – 2
सच्चा सतगुरू, कोई कोई पावे, कर जाता वो पार, तुम्हें क्या हो गया रे – 2
ध्यान में रहकर सुरति में जाओ ––

ओ मेरे साहिबा, तुझ बिन ये झूठा संसार रे – 2
तुझ बिन ये जीवन कैसा, सपनों सा लागे संसार रे – 2
ध्यान में रहकर, सुरति में जाओ, संग में सतगुरू पाओ, तुम्हें क्या हो गया रे –2
तुझ बिन जीना, तुझ बिन मरना, ये नहीं सच्ची प्रीत, तुम्हें क्या हो गया रे – 2

—0—

भजन 58

बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

1 जब से तुम बिछड़े मोरे साहिब जी – 2
कभु ना पायो चैन साहिब जी – कभु ना पायो चैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

2 सब्द सुनत मेरी विरहा जागे – 2
मीठे लागे बेन साहिब जी – मीठे लागे बैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

3 खड़ी खड़ी मैं पंथ निहारूं – 2
दिन राती नहीं चैन साहिब जी – दिन राती नहीं चैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

4 हर पल मुझको ऐसा लागे – 2
छः मासा की रैन साहिब जी – छः मासा की रैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

5 विरहा व्यथा कासू बिखानी – 2
जैसे धार कटार साहिब जी – जैसे धार कटार
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

6 भर मारा रे बाण मेरे सतगुरू – 2
जल भर आयो नैन साहिब जी – जल भर आयो नैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

7 पांव पंग कानन बहरा – 2
सुजत कछु नहीं नयन साहिब जी – सुजत कछु नहीं नैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

8 सतगुरू औषधि ऐसी दीनी – 2
रोम रोम भयो चैन साहिब जी रोम रोम भयो चैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

9 सतगुरू जैसा वैद ना कोई – 2
भूजो वेद पुराण साहिब जी – भूजो वेद पुराण
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

10 मीरा रे प्रभु साहिब अविनाशी – 2
अमर लौक में रैन साहिब जी – अमर लौक में रैन
बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

बिन देखे मोहे चैन ना आवे – 2 दुखन लागे नैन – साहिब जी ––

–0–

भजन 59

स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना – तेरी बीती जाती उम्र सार नाम बिना – 2

1 मृत्यू लौक सतलौक बिन, तन हंसा बिन, हंसा मूल सुरति बिना – 2
जैसे मूल सुरति सत सुरति बिना – 2 वैसे प्राणी इक नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

2 दिन रैन बिन, पर्वत हिम बिन, धरती जल बिना – 2
जैसे माता औलाद वहीणी – 2 वैसे प्राणी मूल नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

3 काम क्रौध मद् लौभ हैं मन सूं, छूटे ना सब सार नाम बिना – 2
कहे 'वे नाम' सुनो मन वालो, कोई ना तेरा सार नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

4 जैसे देह पांच तत्व बिन, अण्डा मुर्गी बिन, वैसे प्राणी वेदेह नाम बिना – 2
जैसे मछली जल बिन वहीणी, वैसे प्राणी सुरति नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

5 जैसे देह पांच इंद्री बिन, पंछी चौंच बिन, मोती सीप बिना – 2
जैसे पवन आकाश वहीणी, तैसे प्राणी निःअक्षर नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

6 जैसे मन सुरति बिन, प्राण निरति बिना, गज मुक्ता गज बिना – 2
जैसे हीरा तराशे बिन, तैसे प्राणी गुरू नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

7 जैसे पारा पत्थर बिन , कफूर कैले बिना, हीरा पारस पत्थर बिना – 2
जैसे अग्नि जल वहीणी, तैसे प्राणी वो नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

8 जैसे तीन लौक निरंकार बिन, आकाश सुन्न बिन, तन हंसा बिना – 2
जैसे अमरलौक सतपुरूष वहीणा, तैसे प्राणी विदेह नाम बिना – 2
स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना –

स्मिरण कैसे हो सुरति नाम बिना – तेरी बीती जाती उम्र सार नाम बिना –2

–0–

भजन 60 (भाग 1)

सफरनामा – 1

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

1 साहिब का रूप अति प्यारा, वर्णन सूं बाहिरा है –2
वह प्रकट हों या अप्रकट, ये उनकी मर्ज़ी है – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
2 साहिब ही अमरलौक हैं, अमरलौक ही साहिबन जान – 2
उनका आदि अंत कहीं ना, तीन लौक भी उनमें जान – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
3 वह अमरलौक के स्वामी, सुरति है उनकी वाणी – 2
सुरति का लौक है प्यारा, सुरति ही अमरलौक जान – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
4 वहां बिन धरती सब चलते हैं, बिन पंखों के सब उड़ते हैं – 2
बिन बीज के सब कुछ होता, पुरूष ही सब देते हैं – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
5 बिन सूरज वहां उजियारा, बिन बादल बरसे धारा – 2
बिन भाषा बोली बोलें, सुरति सूं सुरति धारा – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
6 वे नाम जी पास साहिब जी, प्रथम बार जब आए – 2
मैं सच्ची बात बताऊं, मुझे हंसते हुए निहारा – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––

7 वह दूजी बार जब आए, निराकार को संग में लाए – 2
सोहम को तो रक्खा छुपाए, निराकार साकार रूप अपनाए – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

—0—

भजन 61 (भाग 2)

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

1 मैनें पल में उन्हें पहचाना, चरणों में शीष निवारा – 2
पीछे भी चरणों को देखा, उनपे भी शीष निवारा – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
2 उपर को शीष किया तो, निराकार धारा रूप कारा – 2
पल में भूला रूप मैं, जो था अति अधिक उजियारा – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
3 निरंकार ने सौंपा मुझको, सतपुरूष के चरणों में – 2
सतपुरूष ने सौंपा आगे, सतगुरू के चरणों में – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
4 इक माह सुरति में रहकर, सतगुरू सूं गौष्ठी की – 2
सतगुरू की महिमां जानी, सार नाम की दौलत ली – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
5 वे नाम जी यही कहते हैं, सतगुरू का जग सानी ना – 2
सतगुरू ही साहिबन रूप हैं, उनका कोई सानी ना – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
6 सारनाम में सतपुरूष का वासा, जिस एक से मौक्ष मिले – 2
चरणों में शीष झुका कर, सार सब्द का दान जो ले – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———

7 सतगुरू पूर्ण है धोबी, साधक मैला कपड़ा है – 2
सुरत सिला पर उसे वह धोते, मैल छोड़ निखरता है – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

–0–

सफरनामा – 2 भजन 62 (भाग 3)

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

1 तीजी बार साहिब कुटिया में आये, सतगुरू का रूप अपनाये – 2
अपने हाथों से फल उठाया, सतगुरू के चरणों में था सजाये – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
2 हम मीन चाल सूं चल रहे थे, साहिब दो पग उपर थे – 2
एक दूजे को देख रहे थे, तीन लौक से उपर थे – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
3 सुरति सूं साहिब जी दास से, वापिस जाने को बोले – 2
फिर आने का संकेत देकर, फिर निजधाम को चले – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
4 चौथी बार साहिब जी आये, मैं सोया ही पड़ा था – 2
एक जोती कुटिया में आई, मेरी सुरति जागी थी – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
5 दास ने जाना साहिब जी आये, मेरा सोया भाग था जागा – 2
सारी कुटिया जग मगाई, मैं आनंदित हुआ और जागा – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
6 पंजवी बार साहिब प्रकटाये, मैं सुरति में खोया था – 2
सतगुरू रूप था धारा, महां सुन्न में जा रहे थे – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––

7 मीन चाल सूं चल रहे थे, मैं उनमें खोया था – 2
पल में उनके कंई रूप प्रकटाये, मुझे फैंक और पकड़ रहे थे – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

–0–

भजन 63 (भाग 4)

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

1 छटी बार साहिब जब आये, सुरति सूं संग लिया – 2
दोनों नर्क लौक में पंहुचे, कंई आत्माओं ने घेर लिया – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
2 आत्माओं की व्यथा को जाना, और कुछ संकेत किया – 2
दास दूरी पर खड़ा था, दुखी दास भी हो गया – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
3 सांतवी बार साहिबन सुरति आई, मान सरोवर ली उडारी – 2
मान सरोवर जोत सरूपी, मन खोने की बारी आई – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
4 डुबकी लगाते पल छिन अंदर, आत्म में चक्की चली – 2
मन का संग तब से टूटा, आत्म हंसा होई – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
5 आंठवी बार साहिब जी आये, हाथ पकड़ निराकार लौक चले – 2
वहां कारे तत्व में तैरे, हाथों में हाथ लिए – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––
6 उस कोरे पत्र को देखा, जो उनके और मेरे आया यूं पास – 2
कुछ समझ ना आई मुझको, तीन लौक सूं लेखा साफ़ – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––

7 सहस्त्रहार चारों ओर से, सुनहरे रंग का जान – 2
उस में 'वी' (अंग्रेज़ी अक्षर) तरज परवेश द्वारा, उसे सतगुरू द्वार जान – 2
ये उनकी रहमत है —— मैं पहुंचा संग दरबार ——

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2
मैं पहुंचा संग निजधाम, साहिब जी इक मिक हो गये हैं – 2

–0–

सफरनामा – 3 भजन 64 (भाग 5)

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2

1 नौंवी बार ध्यान में , आज्ञा चक्र में जा पहुंचा– 2
सतगुरू के दर्शन पाये, मुख में प्रवेश मिला – 2
ये उनकी रहमत है —— मैं पहुंचा संग दरबार ——
2 सुरत कमल में हुआ प्रवेश, चरणों में शीष धरा – 2
सतगुरू के चरण खो गये, सतपुरूष का आगमण हुआ – 2
ये उनकी रहमत है —— मैं पहुंचा संग दरबार ——
3 वे आगे और दास था पीछे, निजधाम को चल दिये – 2
पल में पहुंचे निजघर में, जहां हसों के दर्श किये – 2
ये उनकी रहमत है —— मैं पहुंचा संग दरबार ——
4 बिन धरती आकाश का देसा , बिन धरती दास (हंसा) खड़ा था – 2
मैं साहिब को डूंढ रहा था, वह निज रूप में जा समाये – 2
ये उनकी रहमत है —— मैं पहुंचा संग दरबार ——
5 वह अरूप में रूप किये थे, बिन हंसों के देखा ना किसी को – 2
उन्होंने सुरति सूं ये बोला, बुरा मत कहना तुम किसी को – 2
ये उनकी रहमत है —— मैं पहुंचा संग दरबार ——
6 सहस्त्रहार पत्र के प्रति बोले, तेरा लेखा काल से छूटा – 2
तीन लौक भ्रम जाल का धोखा, तुम जागे तो वह छूटा – 2
ये उनकी रहमत है —— मैं पहुंचा संग दरबार ——

7 दास ने तीन चक्र लगाये, कहीं काल जाल ना देखा – 2
आखिर एक जगह पर, निज शरीर को देखा – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2

—0—

भजन 65 (भाग 6)

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2

1 उसके आगे पीछे घूमा, फिर सांसा द्वार सूं प्रवेश पाया – 2
जब सुरति दास की टूटी, कुटिया में निज को पाया – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
2 सतगुरू जीव प्रमाधी, नाम लखावे सुरति सार – 2
सार सब्द को जो जन गहे, सोई उतरे भवजल पार – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
3 पिण्ड ब्राह्मण्ड के पार वह, सत्यपुरूष निज धाम – 2
सार सब्द को जो कोई गहे, पावे तहां विश्राम – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
4 नहीं उत्पति नही प्रलय, नहीं आवे नहीं जाय – 2
वर्णन सूं वह बाहिरा, सुरति सूं सब्द ध्यावे – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
5 जो कोई मांगने आवे, ताको है सब नाश – 2
लिखत पड़त के बिन है, सार सब्द प्रकाश – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———
6 गुप्त निःअक्षर परखिये, अंदर सुरति प्राण समान – 2
सार सब्द में जो रतो, जग में वह ही महान – 2
ये उनकी रहमत है ——— मैं पहुंचा संग दरबार ———

7 जीव असंख्य बह गये, बिन जाने निज भेद – 2
कोई हंसा बराबर है नहीं, बिन जाने गुप्त निःअक्षर भेद – 2
ये उनकी रहमत है ––– मैं पहुंचा संग दरबार –––

मैं पहुंचा संग दरबार (निजधाम), साहिब जी खो गये हैं – 2
आरूप में रूप को देखा, पाया सब सुरति में – 2

–0–

भजन 66 (भाग 1)

पायो जी मैनें सार सब्द धन पायो – 4
वस्तू अमोलक साहिब जी दीनी – 2
कृपा करि अपनायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें –––

1 लाखों जन्म काट पूंझी पाई – 2 – मन सूं आन छुड़ायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
2 सुरति ना टूटे काल ना लूटे – 2 – पल पल सुरति जगायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
3 सार नाम ना छूटे काल ना लूटे – 2 – सुरति आन जगायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
4 सार सब्द सतपुरूष जी वासा – 2 – तीन लौक तर जायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
5 वे नाम जी ने दात है पाई – 2 – सतलौक संग जायो पायो, जी मैनें
पायो जी मैनें ––
6 सुश्मिन द्वार सूं आज्ञा चक्र जाई – 2 – सुरत कमल संग जायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
7 अमरलौक ही सच्चा देसा – 2 – साहिब जी संग समायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
8 अमरलौक हंसों का ढेरा – 2 – जहां से सभी हंस आयो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
9 सतगुरू दर पर शीश झुकायो – 2 – छूटे माल परायो पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––

10 सतगुरू चरणन शीष नवाओ – 2 – सुरति सूं सब पायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––

पायो जी मैनें सार सब्द धन पायो – 4
वस्तू अमोलक साहिब जी दीनी – 2
कृपा करि अपनायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें –––

–0–

भजन 67 (भाग 2)

पायो जी मैनें सार सब्द धन पायो – 4
वस्तू अमोलक साहिब जी दीनी – 2
कृपा करि अपनायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें –––

1 सतगुरू संग तो सतपुरूष दासा – 2 संतन चरणन धुण लगायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
2 सार सब्द सतपुरूष की डौरी – 2 पतंग बन घर जायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
3 हंसा बन निज घर को जायो – 2 पूर्ण मौक्ष तिन पायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
4 सतलौक ही साहिबन रूप हैं – 2 अरूप में रूप समायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
5 युगों युगों से भटकता जीवा – 2 काल ने ग्रास बनायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
6 दो बार साहिब जी दात है दीनी – सतपुरूष जी वे नाम अति भायो पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
7 सतनाम वे नाम जी पासा – 2 आप ही आप जग आयो पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
8 जब तक मन सूं संग ना छूटे – 2 महा मौक्ष नहीं पायो पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––
9 अमरदात जब पास है तेरे – 2 साहिब भी संग समायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ––

पायो जी मैनें सार सब्द धन पायो – 4
वस्तू अमोलक साहिब जी दीनी – 2
कृपा करि अपनायो, पायो जी मैनें
पायो जी मैनें ———

—0—

भजन 68 (भाग 1)

मुझे मेरे प्यारे काम जो दिया है – सार नाम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा – काम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा अमर प्रेम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2

1 ना मिलती अगर मुझे सच्ची दात तेरी – 2
तो कैद कैसे जाती आत्म की मेरी – 2
मन माया ने घेरा – सार नाम सूं टूटे – तेरा शुक्रिया है – 2
2 सतगुरू महिमां जग ने ना जानी – 2
तो ही तो अपनी महिमां ना पहचानी – 2
नींद है गहरी प्राण अधूरे – तेरा दोष अपना, किसी का नहीं है – तेरा शुक्रिया है – 2
3 आषा तृष्णा मिल सुरति को घेरा – 2
सार सब्द तोड़ा मन का ये घेरा – 2
लाखों जन्म से मन ने आत्म को लूटा—ये भेद सारा हंसा ने ना जाना—तेरा शुक्रिया है—2
मेरी भूल सारी दोष तेरा नहीं है – 2
4 फूल जो खिलते उनकी महिमां ना जानी – 2
प्रेम लुटाने की सुरति ना जानी – 2
तूने खिलना ना जाना, निज ना पहचाना—यही भूल तेरी और नहीं है—तेरा शुक्रिया है – 2
5 संतन बिन भव निज, तरे है ना कोई – 2
हरि वृंच सतगुरू सम होई – 2
कल कल ने था घेरा, सार नाम ने तोड़ा – तेरा शुक्रिया है – 2
6 हरि ने सब को कुटुम्भ जाल मे घेरा – 2
सतगुरू काटी ये ममता की बेड़ी – 2
काल जाल का बंधन, सार सब्द सूं टूटा – तेरा शुक्रिया है – 2

7 हरि तो तजुं सतगुरू ना बिसारूं – 2
सार नाम के सम, हरि नाम ना उच्चारूं – 2
सतगुरू ने गहरी नींद सूं जगाया–निःअक्षर सूं दासा हंसा बनाया – तेरा शुक्रिया है –2

मुझे मेरे प्यारे काम जो दिया है – सार नाम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है –2
मुझे मेरे साहिबा – काम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा अमर प्रेम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2

–0–

भजन 69 (भाग 2)

मुझे मेरे साहिबा काम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2
सार नाम जो दिया है अमर प्रेम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2

1 हरि तज डालूं साहिब ना विसारूं – 2
हरि नाम छोड़ सार नाम को उच्चारूं – 2
सार नाम गहरी नींद सूं जगाया – तेरा शुक्रिया साहिबा – 2
2 निःअक्षर (सार नाम) जो ध्यावे पूर्ण मौक्ष को पावे – 2
ता का जग सूं पूर्ण लेखा मिट जावे – 2
सुरति में रहकर मूल सुरति को पावे – तेरा शुक्रिया है – 2
3 सार (नाम) सब्द विदेह स्वरूपा – 2
छिन ईक सुरति हंसा हो रूपा – 2
सतगुरू अंदर दर्श जो पावे–पल ही पल सतपुरूष पा जावे–तेरा शुक्रिया है – 2
4 नाम विदेह कोई बिरला ही पावे – 2
सुरत कमल जा निज घर पावे – 2
बिना भेद जाने अंधी ही सुरति – 2 तेरा शुक्रिया है – 2
5 नाम जब पाया स्थिर हुआ मनवा – 2
सुरत चले तब ध्यावे नामा – 2
आज्ञा चक्र में सुरति सतगुरू संग पाओ – 2 तेरा शुक्रिया है – 2
6 सार सब्द है अधर अटारी – 2
असंख्य सूर्य सतपुरूष उजियारी – 2
मूल सुरति के बनते हंसा कहलाओ – 2 तेरा शुक्रिया है – 2

7 निःअक्षर नाम सतगुरू समझाई – 2
अक्षर ब्रह्म सब जगत कहाई – 2
अमर लौक मौक्ष का देशा–ये संसार जानो काल का देशा –तेरा शुक्रिया है –2

8 साहिब जी कृपा करि अपारा – 2
सत सुरति आनंद प्रेम उजियारा – 2
विनती करूं मैं दोनों हाथ जोड़ी–तुम संग प्रेमी और नहीं है–तेरा शुक्रिया है– 2

मुझे मेरे साहिबा काम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2
सार नाम जो दिया है अमर प्रेम जो दिया है – तेरा शुक्रिया है – 2

–0–

भजन 70 (भाग 1)

कौन कहता है जहां में – मैने पाया है उन्हें – 2
कुछ ना कर पाता है तूं – यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

1 जन्मों जन्मों से तूं जग में – है भटकता फिर रहा – 2
वै तो तेरे स्वांस स्वांस में – 2 फिर भी कहता दूर है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

2 हर जन्म में तूने खुद को – माया में पाया सदा – 2
भूत भविष्य में तूं है रहता – 2 तांहि से तूं दूर है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

3 जन्मों के संस्कार कारण – 2 खोया सच्ची राह तूं – 2
झूठे धर्म कर्म में रहता – 2 यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

4 जो भी दिखता, बिन माया ये कुछ ना – 2 यही तो मन का जाल है – 2
बाहिर उसकी खोज करता – 2 तांहि उससे दूर है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

5 मानने से कुछ ना होता – 2 खुद को जानो तो मिले – 2
वेद पुराणों में डूंडते हो (फिरते) – 2 यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

6 प्रेम भी तुम जग से करते – 2 मिलती माटी धूल है – 2
सपनों से ही प्रेम करते – 2 यही तो तुमरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

7 जिनको तुम सुख दुख हो कहते – 2 वह तो मन का जाल है – 2
जमना मरना जग में तेरा – 2 यही तो बंधन मूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

8 तन का दीप बुझने से पहले – 2 पालो पूर्ण संत को – 2
सजीव नाम की महिमां ना जानी – 2 यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

कौन कहता है जहां में – मैने पाया है उन्हें – 2
कुछ ना कर पाता है तूं – यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

–0–

भजन 71 (भाग 2)

कौन कहता है जहां में – मैने पाया है उन्हें – 2
कुछ ना कर पाता है तूं – यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

1 सजीव नाम में आप हैं रहते – 2 मन का मान तोड़े वहीं – 2
महिमां नाम की जग ने ना जानी – 2 यही बड़ी तो भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

2 दात बिन निज को ना जाना – 2 सुरति निरति हंसा हो – 2
सांसा भेद तूने ना जाना – 2 कैसी तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

3 सांसा जानी तो निज को जाना – 2 प्राण आत्म अंग थे – 2
मूल सुरति जोड़ तूं – 2 कैसे तेरी भूल है – 2
मूल सुरति जुड़ती नांहि – 2 कैसी तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

4 सुश्मिन द्वार सूं चढ़ना सीखो – 2 सुरत कमल के द्वार तक – 2
सतगुरू महिमां भी ना जानी – 2 कैसी तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

5 सार सुरति सूं मौक्ष मिलता – 2 मन जाप सूं धूल – 2
अंदर से चलना तूने ना सीखा – 2 यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

6 खुद को जाना तो उनका पाना – 2 साहिब तो पल पल संग में – 2
अंदर की आंख तेरी सोई पड़ी है – 2 यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

7 एक मुर्दे तन में तूने – 2 नाम दात सत्त भर दिया – 2
जग तो जीना भूल चुका है – 2 बिन माफी उसकी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

8 कोन कहता है जहां में – 2 ये जीना भी कोई जीना है – 2
दास कुछ कर पाया ना जग में – 2 ये सोच भी इक भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में –

कौन कहता है जहां में – मैने पाया है उन्हें – 2
कुछ ना कर पाता है तूं – यही तो तेरी भूल है – 2
कुछ ना कर पाता है तूं –– कौन कहता है जहां में ––

–0–

भजन 72 (भाग 1)

जो चले गये सो संग तेरे – कोई मूल सूं टूट ना पाता है – 2
हमरी डौर जुड़ी सतलौक से – वही तो देश हमारा है – 2
हमरी डौर जुड़ी सतपुरूष से – वही तो पिता हमारा है – 2

1 हम सब हंसा रूप जहां – तन मन का जाल पसारा है – 2
मन तरंग ने भरमाया है – हम जागें पास किनारा है – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

2 मानुष जन्म अति अनमोल मिला – महिमां तूने जानी ना – 2
जो सोये सोये चले गये – पाया ना सतगुरू प्यारे को – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

3 मधु मक्खी भी जग में आती है – अति प्यारा मधु दे जाती है – 2
कंई रोगों से हम्हें बचाती है – जो जागो तो बात बन जाती है – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

4 सीप भी बूंद स्वाति सूं – हम्हें मोती देकर जाती है – 2
वह अंदर का राज़ बता कर के – अपनी महिमां का राज़ दे जाती है – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

5 गजमुक्ता बूंद स्वाति सूं – बनता हाथी के कानों में – 2
मनुष्य भी ऐसा प्राणी है – अंदर झांकने से वह डरता है – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

6 मृग की नाभी में कस्तूरी है – खुद वन वन डूंडता फिरता है – 2
मानुष भी अति ऐसे सोया पड़ा – भगवन डूंडे फिरता विरानों में – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

7 तूं आया जग में जाना ना – हीरा जन्म बारंम्बार मिले – 2
तुम ऋतु अनुसार बदलते हो – सुख दुख भी तुझे भिन्न दिखता है – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

8 सागर तट पर रहती एक ऋतु – तुम्हें सागर अंदर पाना है – 2
बिन सतगुरू पाना असंभव है – तुम कितना ज़ोर लगा डालो – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

जो चले गये सो संग तेरे – कोई मूल सूं टूट ना पाता है – 2
हमरी डौर जुड़ी सतलौक से – वही तो देश हमारा है – 2

–0–

भजन 73 (भाग 2)

जो चले गये सो संग तेरे – कोई मूल सूं टूट ना पाता है – 2
हमरी डौर जुड़ी सतलौक से – वही तो देश हमारा है – 2
हमरी डौर जुड़ी सतपुरूष से – वही तो पिता हमारा है – 2

1 पूर्ण सतगुरू का जब संग मिले – सागर तट का पास ठिकाना है – 2
सुख दुख अब एक समान लगें – हर ओर सूं प्रेम की महक उठे – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

2 आशा तृष्णा का महल भी टूट गया – मन देख के यह सब चकित हुआ – 2
मन की तरंग का अंत हुआ – सुरति तरंग का उद्‌य हुआ – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

3 सार नाम की महक हर ओर उठी – अंदर सतगुरू रूप का दर्श मिला – 2
तेरे अपने देख आनंदित हुए – मन माया का संग अब टूट गया – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

4 कोई मरा नहीं सब संग तेरे – तुम जागो तो वो भी जागें – 2
वे सुरति सूं हर पल संग तेरे – तुम निजघर वे भी संग तेरे – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

5 इक्कतर पीढ़ी तेरी संग तेरे – तेरी महिमां का गुणगान करें – 2
तुम आगे तो वे पीछे हैं – सतगुरू जहाज तुम्हें पार करे – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

6 मानुष ही जग में ऐसा है – जो सार नाम बिन प्यासा है – 2
सार नाम में सुरति प्राण धरो – फिर पल में जग सूं पार चलो – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

7 सार सब्द सतपुरूष–सुरति है – हंसा को मन से पार करे – 2
कोई विरला सतगुरू पाता है – वह ही तो मौक्ष विधाता है – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

8 सतगुरू साहिबन में भेद नहीं – ईक कर्त्ता ईक करवाता है – 2
मानुष को पार लगाने से – सतगुरू की महिमां अपार है – 2
हमरी डौर जुड़ी ––– जो चले गये –––

जो चले गये सो संग तेरे – कोई मूल सूं टूट ना पाता है – 2
हमरी डौर जुड़ी सतलौक से – वही तो देश हमारा है – 2
हमरी डौर जुड़ी सतपुरूष से – वही तो पिता हमारा है – 2

–0–

भजन 74 (भाग 1)

मुझे मेरे साहिबा काम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा सार नाम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा अमर प्रेम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2

1 ना मिलती अगर मुझे सच्ची दात तेरी
तो कैद कैसे जाती आत्म की मेरी
मन माया का घेरा सार नाम सूं टूटे .... तेरा शुक्रिया है –2

2 सतगुरू महिमां जग ने ना जानी
तो ही तो अपनी महिमां ना पहचानी
नींद है गहरी प्राण अधूरे
तेरा दोष अपना किसी का नहीं है .... तेरा शुक्रिया है –2

3 आषा तृष्णा मिल सुरति को घेरा
सार सब्द तौड़ा मन का ये घेरा
लाखों जन्मों से मन ने आत्म को लूटा
ये भेद सारा हंसा ने ना जाना .... तेरा शुक्रिया है –2

4 फूल जो खिलते उनकी महिमां ना जानी
प्रेम लुटाने की सुरति ना जानी
तूने खिलना ना जाना निज को ना पहचाना
यही भूल तेरी यही भूल तेरी .... तेरा शुक्रिया है –2

5 संतन बिन भव निज तरे ना कोई
हर वृंच सतगुरू संग ही होई
कल कल ने था घेरा
सार नाम ने है तौड़ा .... तेरा शुक्रिया है –2

6 हरि ने सब को कुटुम्ब जाल में घेरा
सतगुरू काटी ये ममता की बेड़ी
कल कल ने था घेरा
सार नाम ने है तौड़ा .... तेरा शुक्रिया है –2

7 हरि तो तजुं सतगुरू ना विसारूं
सार नाम के सम हरि ना ऊचारूं
सतगुरू ने गहरी नींद सूं जगाया
निअक्षर सूं हंसा बनाया .... तेरा शुक्रिया है –2

8 हरि तज डालूं साहिब ना विसारूं
हरि नाम छौड़ सार नाम ऊचारूं
सार नाम की गहरी नींद सूं जगाया
साहिबा गहरी नींद सूं जगाया .... तेरा शुक्रिया है –2

मुझे मेरे साहिबा काम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा सार नाम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा अमर प्रेम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2

–0–

भजन 75 (भाग 2)

मुझे मेरे साहिबा काम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा सार नाम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा अमर प्रेम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2

1 निअक्षर जो ध्यावे पूर्ण मौक्ष को पावे
ताका जग सूं पूर्ण लेखा मिट जावे
सुरति में रहकर मूल सुरति को पावे
मूल सुरति को पावे मूल सुरति को पावे .... तेरा शुक्रिया है –2

2 सार सब्द विदेह सरूपा
छिन ईक में हंसा हो रूपा
सतगुरू अंदर दर्श जो पावे
पल ही पल सतपुरूष पा जावे .... तेरा शुक्रिया है –2

3 नाम विदेह कोई विरला ही पावे
सुरत कमल जा निज घर पावे
बिन भेद जाने अन्धी है सुरति
साहिबा तेरा शुक्रिया है .... तेरा शुक्रिया है –2

4 नाम जब पाया थिर हुआ मनवा
सुरति चले तब ध्यावे नामा
आज्ञा चक्र में सुरति सतगुरू संग पावे
साहिबा तेरा शुक्रिया है .... तेरा शुक्रिया है –2

5 सार सब्द है अधर अटारी
असंख्य सतपुरूष उजियारा
मूल सुरति के बनते हंसा कहलाओ
साहिबा हंसा कहलाओ .... तेरा शुक्रिया है –2

6 निअक्षर नाम सतगुरू समझाई
अक्षर भ्रम सब जगत कहाई
अमर लौक मौक्ष का देशा
ये संसार जानो काल का देशा .... तेरा शुक्रिया है –2

7 साहिब जी कृपा करि अपारा
सत सुरति आनंद प्रेम उजियारा
विनती करूं दोनों हाथ जोड़ी
तुम संम प्रेमी और नहीं है
हर पल तुमरी महिमां मैं गाऊं .... तेरा शुक्रिया है –2

मुझे मेरे साहिबा काम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा सार नाम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2
मुझे मेरे साहिबा अमर प्रेम जो दिया है, तेरा शुक्रिया है – 2

–0–

भजन 76 (भाग 1)

सुनो रे भाई – 2 मौक्ष की दात सार नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – 2 जागो सोए भाई – 2
सुनो रे भाई मौक्ष ———

1 कंई जन्म सूं जीव सोया पड़ा है – 2 गहरी नींद पड़ी – 2
सपने भी माया के लेता – 2 अंधी सुरति मिली – 2 साहिब जी ——

2 जगत जंझाल सब झूठ की सुरति – 2 हो जा इन सूं पार – 2
जिसके बल सूं पार है जाना – 2 वह तो बीच मझदार – 2 साहिब जी ——

3 जग की कथा सब छोड़ छाड़ के – 2 सतगुरू शरणी आ – 2
निज स्वरूप बिन जाने कोई – 2 कैसे उतरे उस पार – 2 साहिब जी ——

4 काम क्रौध मद् लोभ ना जाए – 2 यह सब मन आधार – 2
त्याग विराग श्रद्धा को धार के – 2 बिन सार नाम नहीं पार – 2साहिब जी ——

5 प्रेम को पुरूष सुरति को धूप दे – 2 चित चंचल नाम सार – 2
सील संतोष क्षमा अहिंसा – 2 सेवा जहाज सूं पार – 2 साहिब जी ––

6 भव तरन को अवसर आयो – 2 जाग कर होश में आयो – 2
बहु जन्म के पूर्व पुण्य से – 2 मानुष तन चोला पायो – 2 साहिब जी ––

7 सतगुरू कृपा संत समागम – 2 चरणों संग समायो – 2
वे नाम सतगुरू कृपा कीन्ही–2 कर्म भरम सुरति जौत जगायो–2 साहिब जी ––

8 सार नाम सूं सतगुरू जगायो – 2 सुरति सूं गुण गायो – 2
सतगुरू सच्ची राह चलायो – 2 बिन अवगुण कुछ नांहि – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई – 2 मौक्ष की दात सार नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – 2 जागो सोए भाई – 2
सुनो रे भाई मौक्ष –––

–0–

भजन 77 (भाग 2)

सुनो रे भाई – 2 मौक्ष की दात ईक नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – 2 जागो सोए भाई – 2
सुनो रे भाई मौक्ष ––

1 सब जीव हंसा प्रेम प्यारे – 2 निजघर दर्शन पायो – 2
महिमां साहिबा वर्णन बाहिरा – 2 शब्द कहां से लांऊ – 2 साहिब जी ––

2 अंग अंग चमके जोत सरूपी – 2 लाखों सूर्य शरमाये – 2
साहिबन प्रीति हर जीव सूं – 2 जोत में जोत समाये – 2 साहिब जी ––

3 धरती नांहि अंबर नांहि – 2 वह देश उस पारा – 2
हर हंसा अंग साहिबन का जानो – 2 सुरति सूं देत पुकारा – 2 साहिब जी

4 सुनो भाई साधो महिमां अपरम्पारा – 2 सुनो भाई साधो महिमां अपरम्पारा
प्यारो मानो कहा हमारा – 2 सार नाम जहाज सूं होत पारा – 2 साहिब जी

5 सार नाम सूं अमृत वर्षा – 2 सुरति सूं पार लगायो – 2
बूंद बिछड़ी आद की है – 2 सागर में जा समायो – 2 साहिब जी ––

6 सात द्वीप नौ खंड तहां ना – 2 ना जाना कोई हंसा – 2
धुंधकार वहां सुन्न है नांहि – 2 नहीं कोई बहता पानी – 2 साहिब जी ––

7 दस अवतार वहां कुछ नांहि – 2 रचियो पिण्ड प्रकाशा – 2
सूर्य चांद तारा वहां नांहि – 2 एक सी ऋतु उस पारा – 2 साहिब जी ––

8 ना कोई चलते हिलता वहां पर – 2 मीन पपील नहीं चाल – 2
बिन बादल तहां वर्षा होती – 2 सुरति विहंगम चाल – 2 साहिब जी –

सुनो रे भाई – 2 मौक्ष की दात ईक नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – 2 जागो सोए भाई – 2
सुनो रे भाई मौक्ष ———

—0—

भजन 78 (विषय प्रेम) (भाग 3)

सुनो रे भाई – मौक्ष की दात प्रेम नामा – 2
मन माया वश तीन लौक हैं – 2 सुरति जगाओ भाई – 2 साहिब जी ——

1 जब लग पीड़ पराई जानो – प्रेम ना उपझे कोए – 2
कौटि बंदगी कर्म धर्म सूं – छूटे ना बंधन कोए – 2 साहिब जी ——
2 सुरति में विरह ना जागे भाई – बाहिर को करे पुकार – 2
यही तो भटकन जीव की प्यारो – कैसे खुले मौक्ष किवाड़ – 2 साहिब जी ——
3 आत्म कुंवारी हो जाए तो – साहिब सूं मिले सो बार – 2
दोनों ईक मिक हो जाते जब – बहती प्रेम की धार – 2 साहिब जी ——
4 प्रेम तो उपझे आत्म सुरति सूं – विरह सूं सुरति बहत – 2
साहिब सूं प्रीति जब हो जाए – प्राणों में प्राण आधार – 2 साहिब जी ——
5 हर घट हंसा प्रेम का सागर – मन का घट नांहि – 2
साधो शुभ दिन शुभ घड़ी वह – मन प्रेम बिन कुछ नांहि – 2 साहिब जी ——
6 सुरति निरति मिल जाने पर – मूल सुरति प्रीत की धार बन जाए – 2
उल्टि स्वांसा हो जाने पर – तन भी सुन्न हो जाए – 2 साहिब जी ——
7 अब धारा ही राधा (सुरति) बन गई – चली शिव नेत्र पार – 2
आत्म हंसा हो गई प्यारो – लगन मंडल उस पार – 2 साहिब जी ——
8 यही विधि मोरा हंसा आज्ञा चक्र में – दर्श किया सरकारा – 2
सतगुरू संग ले चलें अपने – सुरत कमल दरबारा – 2 साहिब जी ——
9 यही विधि मोरा हंसा सुरत कमल में – चरणन शीष दिया डाल – 2
घुंघरूं ताल ऐसी बाजी – खुल गये सभी किवाड़ – 2 साहिब जी ——

सुनो रे भाई – मौक्ष की दात प्रेम नामा – 2
मन माया वश तीन लौक हैं – 2 सुरति जगाओ भाई – 2 साहिब जी ——

—0—

भजन 79 (भाग 4)

सुनो रे भाई – मौक्ष की दात प्रेम नामा – 2
मन माया वश तीन लौक हैं – 2 सुरति जगाओ भाई – 2 साहिब जी ––

1 सतगुरू चरणन खो गये पल में – महां ज्योति भंडार – 2
सौलहं सूर्य ज्योति को धारा – साहिबन संग साहिब दरबार – 2 साहिब जी
2 राम शरीका राम है प्यारो – दूजा नहीं कोए – 2
अंदर बाहिर अब राम बिन नांहि – दूजा बचा ना कोए – 2 साहिब जी –
3 मीरा खोकर कह गई जग को – ढूंढो मुझे मैं खोई – 2
पायल नांहि घुंघरू नांहि – ले चली छम छम चाल – 2 साहिब जी ––
4 ऐसी सुरति जब बन जाए – साहिबन संग निज साथ – 2
अब घर खाली हो गया साधो – साहिबन भरा छिन आप – 2 साहिब जी ––
5 सुरति निरति मन पवना – मिल के बने ईक तार – 2
अब तो कुछ भी और ना चाहे – सब सारन का सार – 2 साहिब जी ––
6 एक ही तो निजधाम है प्यारो – सार नाम की तार – 2
सार नाम में सब समाया – डूब के जाता पार – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई – मौक्ष की दात प्रेम नामा – 2
मन माया वश तीन लौक हैं – 2 सुरति जगाओ भाई – 2 साहिब जी ––

–0–

भजन 80 (भाग 5)

सुनो रे भाई – मौक्ष की दात मूल नामा – 2
मन माया वश तीन लौक हैं – 2 सुरति जगाओ भाई – 2 साहिब जी ––

1 प्रेम निशानी मौत की – मर कर इसे करो पार – 2
बिन मरे इस का भेद नांहि – मरते ही प्रेम की तार – 2 साहिब जी ––
2 मरने के नाम सूं जग डर जाता – यही तो बड़ी भूल – 2
बिन मरे इसे पावे नांहि – कौटि कर्मन भूल – 2 साहिब जी ––
3 सोया जीव ना जाने प्रेम को – वह करता जग बात – 2
अंदर सूं मन प्रेम ना है – करता जीवन घात – 2 साहिब जी ––

4 सार दात पाये बिना – मन का छूटे ना साथ – 2
आत्म ना हंसा हो सके – प्रेम की कैसी बिसात – 2 साहिब जी ––
5 प्रेम बिन मरना ना हो सके – सार नाम बिन बने ना बात – 2
मरिये तो मर जाये – तन छूटे तो बने ये बात – 2 साहिब जी ––
6 प्रेम सागर अथाह है – इसे डूब के करयो पार – 2
जो डूब गया सो पा गया – बिन डूबे विच मझेदार – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई – मौक्ष की दात मूल नामा – 2
मन माया वश तीन लौक हैं – 2 सुरति जगाओ भाई – 2 साहिब जी ––

–0–

भजन 81 (भाग 6)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात मूल नामा – 2
मन माया वश हंसा सुरति – 2 सुरति जगाओ भाई – 2

1 आकर सत्संग सार रस पाओ – 2 संतन दर्शन सूं पार – 2
उनके नेत्र सतपुरूष समाई –2 रज रज ज्योत वास उर आई – 2 साहिब जी –
2 जब तक विरह ना उपझे प्यारो – 2 तब लग प्रेम नांहि – 2
जब तक सुरति प्रेम ना सींचरे – 2 नेत्र अश्विन नांहि – 2 साहिब जी ––
3 सार नाम सूं प्रीती करें यूं – 2 जैसे नाद कुरंग – 2
उस में ऐसे डूब मरो तुम – 2 जैसे चातक स्वाति बूंद – 2 साहिब जी ––
4 हंसा माला प्रेम की पहनो – 2 देखें साहिब उस पार – 2
यह माला है नाम की सुरति – 2 विरह में पहनी जाए – 2 साहिब जी ––
5 नैनन सूं अश्विन की धारा – 2 देती महां प्रेम संदेश – 2 साहिब जी
विरह अश्विन बहती धारा – 2 देती प्रेम संदेश – 2 साहिब जी ––
6 अश्विना धारा प्रेम का धागा – 2 मत तोड़ो ये तार – 2
टूटे फिर जुड़ेगी कैसे – 2 यह तो बहती धार – 2 साहिब जी ––
7 प्रेम बिन कुछ है नहीं कहीं पर – 2 प्रेम ही प्रेम चहुं ओर – 2
तुम कमल समान खिलो तो – 2 कीचड़ की होत पहचान – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई मौक्ष की दात मूल नामा – 2
मन माया वश हंसा सुरति – 2 सुरति जगाओ भाई – 2

–0–

भजन 82 (भाग 7)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सब्द नामा – 2
मन माया वश हंसा सुरति – 2 सुरति जगाओ भाई – 2

1 बिन कीचड़ तुम कमल ना जानो – 2 तांहि से प्रकटे प्रेम – 2
अमर लौक बिन प्रेम कुछ नहीं – 2 नहीं प्रेम बिन नाम – 2 साहिब जी ––
2 तुम सूं तुम खो गये हो – 2 कैसे उपझे प्रेम की तान – 2
प्रेम ही सीढ़ी हंसा होना – 2 चड़ो तो सुन लो तान – 2 साहिब जी ––
3 प्रेम ही पूर्ण सार नाम है – 2 निज धाम फूलों की वास – 2
तुम तो कली, कली ही रह गये –2 कैसे प्रकटे फूलों की वास –2 साहिब जी –
4 तेरा अंदर जगमग हो तो – 2 कचरा राख बने – 2
प्रेम ज्योत सार नाम सूं – 2 महां प्रेम जोत बने – 2 साहिब जी ––
5 प्रेम धार महां सागर में समा कर – 2 महां सागर हो जाए – 2
बिन डूबे ये पार हो कैसे – 2 डूब के पार हो जाए – 2 साहिब जी ––
6 प्रेम तो ऐसी दात है प्यारो – 2 शब्दों में कैसे समाए – 2
यह तो सुरति बहती धारा – 2 मुख मन में ना आए – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सब्द नामा – 2
मन माया वश हंसा सुरति – 2 सुरति जगाओ भाई – 2

–0–

भजन 83 (भाग 8)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सब्द नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

1 आत्म राज दुलारी छः तन तज चल दी – विहंगम चाल सूं पार – 2
सार नाम की दात सूं प्यारो – जा पहुंची दरबार – 2 साहिब जी ––
2 सब हंसा ने घेर लिया आकर – (मीरा) क्यों करी इतनी देर – 2
जब कोई हंसा निज घर पहुंचे – सुरति का गूंझे नाद– 2 साहिब जी ––
3 अमृत की तहां वर्षा होती – भीगें सुरति अंग – 2
साहिब जो मिलते प्यार सूं प्यारो – प्यार की होती बरसात – 2 साहिब जी ––
4 जब कोई जाता निज घर अपने – सुध ना रहे यह देह – 2
पांच तत्व गुण तीन संग ना – ऐसा सब्द विदेह – 2 साहिब जी ––

5 सब्द बिन है सुरति अंधी – राह ना पावे कोए – 2
सब्द हमारा तूं भी सब्दे – सतगुरू सूं ले लो यह – 2 साहिब जी ––
6 निह तत्व भेद गुप्त है प्यारो – पांच तीन से बाहर – 2
सार नाम निज मंत्र है प्यारो – शेष मंत्र सब छार – 2 साहिब जी ––
7 तप साधन कोई काम ना आवें – केवल नाम आधार – 2
नाम प्रेम है दुर्लभ प्यारो – यही मौक्ष आधार – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सब्द नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

–0–

भजन 84 (भाग 9)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सुरति नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

1 सुरति मूल ठिकाना भाई – पिंड ब्रह्मण्ड से पार – 2
सतगुरू जोहरी भेद बतावें – घाट घाट भेद सूं पार – 2 साहिब जी ––
2 निःअक्षर दात कोई विरला जाने – सार सब्द इक बाण – 2
सुरति डौर को सूक्ष्म जानो – सुरति निरति संग प्राण – 2 साहिब जी ––
3 संतों संग समाधि भली है – दिन दिन आगे चली – 2
जंह जंह डौली पैकरमा जानी – जो करो सो पूजा लागी – 2 साहिब जी ––
4 गृह उजाड़ एक सम देखो – भाव मिटावो दूजा – 2
आंख ना मूंदो द्वार ना रोको –बिन साहिब दिखे ना दूजा – 2 साहिब जी ––
5 सहज लौक तक काल का देशा – यह भी जानो परला देश – 2
आगे अमर लौक है भाई – आदि पुरूष का सच्चा देश – 2 साहिब जी ––
6 सुरति जाए सब्द में समावे – निर्भय साधक कहवे – 2
तज दे धरती आकाश प्यारे – उधर में प्रेम समावे – 2 साहिब जी ––
7 सार नाम की मुक्ति शिला पर – (सुरति) आसन अचल बधांवे – 2
सदा आनंदित, दुख सूं न्यारा – जीवत मौक्ष दिलावे – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सुरति नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

–0–

भजन 85 (भाग 10)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सुरति नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

1 सतगुरू सोई पूरा न्यारो – जीवत मौक्ष दिलावे – 2
उठत बैठत कबहूं ना छूटे – ऐसी ताड़ी लग जावे – 2 साहिब जी ––
2 बिन सतगुरू भक्ति भेद ना पावे – भरम जले संसारा – 2
कहें साहिब जी सुनो भाई साधो – मानो कहा हमारा – 2 साहिब जी ––
3 जहां पांच तत्व नांहि – वहां प्रलय हो कैसे – 2
काया भी नांहि, मन भी नांहि – फिर प्रलय हो कैसे – 2 साहिब जी ––
4 जीव स्वंय को तन है मानता – यही है उसकी भूल – 2
आत्म को स्वंय सूं बिन है मानता – यही है हमरी भूल – 2 साहिब जी ––
5 जंहलग बाणी मन मुख सूं – तंहलग काल का जाल – 2
तीन लौक परे जो सब्द हैं – सौ सतगुरू के पास – 2 साहिब जी ––
6 हर हंसा सतलौक में – अति व्यस्त हर पल जान – 2
हर लौक की खबर रखें – हर प्राणी की पहचान – 2 साहिब जी ––
7 हंसा अकारा से बाहर – सुमिरे निःअक्षर सार – 2
तीत नाद अति आनंदित – सत्य लौक विस्तार – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सुरति नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

–0–

भजन 86 (भाग 11)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात विदेह नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

1 तहां हर सुरति लगावहीं – सार नाम में रहे समाये – 2
निराधार आधार है – सुरति में रहे समाये – 2 साहिब जी ––
2 अनंत सूर्य प्रकाश है – जब देखोगे तुम जाए – 2
एक सी ऋतु हर दम रहती – विहंगम चाल चली जाऐ – 2 साहिब जी ––

3 चौथा समर्थ लौक है – ताका करो विचार – 2
कोई नहीं तुम से पूछता – उपझे खपे विचार – 2 साहिब जी ––
4 सुरत निरत पर ध्यान दो – अंदर सुरति समाये – 2
सब करनी सतपुरूषकी – सुरति रहे ठहराय – 2 साहिब जी ––
5 निह तत्व भेद यह गुप्त है – पांच तीन से न्यार – 2
निह तत्वी जो हंस बने – जाय साहिब दरबार – 2 साहिब जी ––
6 दासा ताको जानिये – जाकी सुरत रहे पूर्ण दास – 2
सुरति सूं सब कर्म करे – मिटे काल की त्रास – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई मौक्ष की दात विदेह नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

–0–

भजन 87 (भाग 12)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात विदेह नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

1 नाम स्नेही हंसा बने – पकड़े सतगुरू डौर – 2
निरखो संतन नाम सुरत से – चल निज घर की ओर – 2 साहिब जी ––
2 आदि नाम निज मंत्र ही – और मंत्र सब छार – 2
कहें साहिब सार नाम बिन – जल मरा संसार – 2 साहिब जी ––
3 सुरत समावे सार नाम में – सब जग सोवत होए – 2
अंदर की आंख दर्शन करे – अंदर में अब सोए – 2 साहिब जी ––
4 सत्य सब्द जपो मंत्र है – चित को देवे मार – 2
निह अक्षर पर मंत्र है – सकल मंत्र को राज – 2 साहिब जी ––
5 सार सब्द में थिर रहो – अस्थिर तील लौक संसार – 2
सतगुरू सुरति में रहो – पल में छूटे संसार – 2 साहिब जी ––
6 सब्द हमारा सत्य है – अनुभव सूं करो विश्वास – 2
बिन सतगुरू के ध्यान के – काल का ना छूटे साथ – 2 साहिब जी ––
7 सार नाम जाना नहीं – अनमोल जन्म गंवाया – 2
जग की माया छूटे नांहि – मन ने ऐसा भरमाया – 2 साहिब जी ––

सुनो रे भाई मौक्ष की दात विदेह नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

–0–

भजन 88 (भाग 13)

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सार नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

1 पिंड ब्रह्मण्ड से उस पार है – सतपुरूष लौक निजधाम – 2
सतगुरू सूं जो दात को पाऐ – वह ही पहुंचे निजधाम – 2 साहिब जी ––
2 नहिं उत्पति नांहि ता प्रलय – ना जन्म मरण सतावे – 2
रात दिन से बिना है – तहां ना नींद सतावे – 2 साहिब जी ––
3 ना कुछ आवे ना कुछ जावे – नांहि प्रलय सतावे – 2
वहां केवल बस्ति ही बस्ति – मरघट नाम तान सतावे – 2 साहिब जी ––
4 संत कौटि बैठे जहां – ज्ञानी लख करोड़ – 2
सार सब्द में जो रती रहे – सो विरला कोई वीर – 2 साहिब जी ––
5 सतपुरूष सब की पहचान रखें – उस आन सौंपें काम – 2
भौगता अनुसार सब काम करें – सब का भिन्न भिन्न काम – 2 साहिब जी ––
6 अच्छा बुरा कोई है नांहि – एक सा है व्योवहार – 2
प्रेम की डौर सूं बांधे सभी – एक सूं करते प्यार – 2 साहिब जी ––
7 हर हंसा सुरति से करें सब काम – सुरति सूं जोड़ी सब तार – 2
सब की सुरति सूं सब से पहचान है – सुरति सूं सुरति की तार – 2साहिब जी –

सुनो रे भाई मौक्ष की दात सार नामा – 2
मन माया वश आत्म सुरति – सुरति को जानो भाई – 2

–0–

भजन 89

सतलौक ज्ञान सभी जग को बतला दिया साहिबा प्यारे ने – 2
जो जाग गया सो पाएगा सार नाम ही पार लगाएगा – 2

1 सतगुरू सक्षम परमहंस प्यारे – 26 जनवरी (2016) पहुंचे निजधाम
विहंगम चाल से परमहंस चलते – वेनाम भी थे संग साथ निजधाम ।
सतपुरूष कृपा सूं हम चले – जा पहुंचे निजधाम ।।

2 सक्षम परमहंस साहिबन संग रहे – वे नाम चले सैल निजधाम
वे नाम पल छिन तीन लौक में – परमहंस पहुंचे बजे जब तीन ।
वे नाम रूप में दर्श दिए – सतपुरूष की महिमां महान ।।

3 वे नाम जब निजघर गए –सतपुरूष आगे दास संग पीछे था
परमहंस सक्षम जब निजधाम चले – वे आगे दास संग पीछे था ।
वे वेनाम सूं आगे हो गए – सतपुरूष की कैसी मेहर हुई ।।

4 वे नाम जी पाया सुरति सूं – सतगुरू पूर्ण जग में आ गए
वे नाम जी केवल दासा हैं – चरण धुली बनने की आशा है ।
वे ही जगत जगावन हारे हैं – सतपुरूष की आंख के तारे हैं ।।

5 वे नाम का यही बस कहना है – सतगुरू सेवा में रहना है
हर पल उनका तुम ध्यान धरो – जब सार नाम में प्राण भरो ।
वह विहंगम चाल सूं आते हैं – तेरे सोए भाग जगाते हैं ।।

6 अब दूजे साहिब जी प्रकट हुए – छे वर्ष से कम निजधाम गए
साहिब सतपुरूष कृपा सूं आए हैं – निजधाम में ले जाने को ।
यह भेद दिया वेनाम प्यारे ने – निजधाम के जानन हारे ने ।।

7 अब काल जाल की कैद गई – आत्म की सारी मैल धुली
विहंगम चाल को मत भूलो – मीन पपील चाल सूं न्यारी है ।
जो सतगुरू सब्द पे ध्यान धरे – विहंगम चाल सूं निजधाम चले ।।

8 सतगुरू कृपा अति महान है – कोई बिरला पावे दात
मन माया तजना अति कठिन है – तजो तो बन जाए बात ।
सतगुरू चरणन की धूल को – तीन लौक से जानो महान ।
कोइ विरला जाने भेद प्यारा – 'वे नाम' दास सूं तूं जान ।।

सतलौक ज्ञान सभी जग को बतला दिया साहिबा प्यारे ने – 2
जो जाग गया सो पाएगा सार नाम ही पार लगाएगा – 2

–0–

अमर लौक भेद (अठतालिसा)

1 बिन पग चले – सुने बिन काना
2 कर विधि कर्म – करे अति नाना
3 बिन मुख बोले – बोल अति नाना
4 खेल इस मन का – पूर्ण ना जाना
5 मत अभी जानो – आत्म हुई हंसा
6 मन संग तार – छूटी मत जानो
7 सुरति भेद – जब तक ना पाया
8 मन की तार – छूटी मत जानो
9 सार नाम बिन – आत्म नहीं हंसा
10 विहंगम चाल सूं – हंसा है चलता
11 मीन पपील चाल सूं – अति अनोखी
12 पल में हंसा – महां सुन्न सूं पारा
13 सतगुरू कृपा सूं – चाल को पाओ
14 मीन पपील चाल – तुम भूल जाओ
15 सार नाम – आत्म करे हंसा
16 विहंगम चाल सूं – हंसा है चलता
17 मिले चाल होए – सुन्न से पारा
18 तभी कहलाए – सतगुरू का प्यारा
19 मन जब छूटे – सुरति जग जाए
20 हर पल सब्द – प्राण सुरति में समाए
21 अब ही शिष्य – निज को जाने
22 तभी वो निज को – जागा माने
23 काल जाल का – बंधन छूटा
24 जन्म मरण का – कलषा फूटा

25 सतगुरू कृपा सूं – निजघर को जांए ।
26 परमहंसा संग – रास रचाएं ।
27 अमरधाम ही है – सत्त का देसा ।
28 गीता भी है – देती संदेसा ।
29 पंद्रवें अध्याय का – छटा श्लौका ।
30 कृष्ण भी निजधाम का – देते संदेसा ।
31 अमरलौक ही – सतपुरूष स्वरूपा ।
32 पहुंचो निजघर – जानो परम स्वरूपा ।
33 ईक ईक अंग की – महिमां जानो ।
34 अपना स्वरूप भी – उनका ही जानो ।
35 पूर्ण सत्तगुरू – रूप को धारो ।
36 उसी रूप को – देख देख न्यारो ।
37 परमहंसा का – रूप मिले जब ।
38 तभी वह – निज रूप को धारे ।
39 वहीं रहो या – इस जग में आओ ।
40 इस का वह कुछ – भेद ना देते ।
41 इस जग आओ – परमहंस कहलाओ ।
42 सार सब्द की – दात को पाओ ।
43 निज को तुम – दासा कर जानो ।
44 जग में बुरा – किसी को मत मानो ।
45 'वे नाम' का केवल – संदेसा है इतना ।
46 जीवित मरना – भव जल तरना ।
47 इस पल में तुम – इस पल में रहना ।
48 सब हैं अपने – कोई ना बैग़ाना ।।

.....''वे नाम का कहा बस इतना मानो
सब को जग में सतपुरूष ही जानो''

–0–

भजन संग्रह संस्करण 2

क्रम	भजन	भाग	पृष्ठ
1	क्यूं अकेला छोड़	1	1
2	क्यूं अकेला छोड़	2	2
3	सब्द सब्द सब कोई	—	3
4	अव्वल संत कबीर	1	4
5	अव्वल संत कबीर	2	5
6	जीवन का मैनें	1	6
7	जीवन का मैनें	2	7
8	क्यूं छोड़ा हंसों को	1	8
9	क्यूं छोडा हसों को	2	9
10	हम वासी उस देश	—	11
11	धन्य धरि सोहि	—	12
12	हंसा क्या उमर तुम्हारी	—	13
13	अनहद नाद उठे	1	14
14	अनहद नाद उठे	2	15
15	क्यूं नहीं तुम	1	16
16	क्यूं नहीं तुम	2	17
17	गीता का ज्ञान	1	18
18	सत्तलौक का ज्ञान	2	19
19	ये दुनियां है धोखा	1	20
20	ये दुनियां है धोखा	2	21
21	ये मन माया तो एक	—	22
22	ये समय जो बीत	—	23
23	चरण बिना मोहे	1	24
24	चरण बिना मोहे	2	25

क्रम	भजन	भाग	पृष्ठ
25	चरण बिना मोहे	3	25
26	चरण बिना मोहे	4	26
27	चरण बिना मोहे	5	27
28	गीता रहस्य	—	27
29	ना लो सपने	—	28
30	सतनाम जपा कर भाई	1	30
31	सतनाम जपा कर भाई	2	31
32	सतनाम जपा कर भाई	3	32
33	ओ मेरे साहिबा	—	32
34	सार नाम की अमृत	—	33
35	सुन लो जगत के	—	34
36	सुरति से मन को	1	36
37	सुरति से मन को	2	37
38	सतनाम को सुरति	1	38
39	सतनाम को सुरति	2	39
40	सतनाम को सुरति	3	40
41	सार नाम सुरति	1	41
42	सार नाम सुरति	2	42
43	सुनो संत प्यारे	—	43
44	अब जागो सोए हंस	—	45
45	तेरे अन्दर अमृत	—	45
46	ये माला है नाम	—	46
47	ओ सतगुरू साहिब प्यारे	—	46
48	सुनो रे मेरे प्यारो	1	47
49	सुनो रे मेरे प्यारो	2	48

क्रम	भजन	भाग	पृष्ठ
50	क्यूं अकेले फिर	—	49
51	ओ मेरे साहिबा	1	51
52	ओ मेरे साहिबा	2	52
53	कुछ ऐसी करनी	—	53
54	मैनें अपनी 'मै'	—	54
55	मन में जो डालो	1	55
56	मन में जो डालो	2	56
57	ओ मेरे साहिबा तुझ	—	58
58	बिन देखे मुझे चैन	—	59
59	स्मिरण कैसे हो सार	—	60
60	मैं पहुंचा संग दरबार	1	61
61	मैं पहुंचा संग दरबार	2	62
62	मैं पहुंचा संग दरबार	3	63
63	मैं पहुंचा संग दरबार	4	64
64	मैं पहुंचा संग दरबार	5	65
65	मैं पहुंचा संग दरबार	6	66
66	पायो जी मैनें	1	67
67	पायो जी मैनें	2	68
68	मुझे मेरे प्यारे	1	69
69	मुझे मेरे साहिबा	2	70
70	कौन कहता है	1	71
71	कौन कहता है	2	72
72	जो चले गये	1	73
73	जो चले गये	2	74
74	ओ मेरे साहिबा	1	76

क्रम	भजन	भाग	पृष्ठ
75	ओ मेरे साहिबा	2	77
76	सुनो रे भाई मौक्ष	1	78
77	सुनो रे भाई मौक्ष	2	79
78	सुनो रे भाई मौक्ष	3	80
79	सुनो रे भाई मौक्ष	4	81
80	सुनो रे भाई मौक्ष	5	81
81	सुनो रे भाई मौक्ष	6	82
82	सुनो रे भाई मौक्ष	7	83
83	सुनो रे भाई मौक्ष	8	83
84	सुनो रे भाई मौक्ष	9	84
85	सुनो रे भाई मौक्ष	10	85
86	सुनो रे भाई मौक्ष	11	85
87	सुनो रे भाई मौक्ष	12	86
88	सुनो रे भाई मौक्ष	13	87
89	सतलौक का ज्ञान	—	87
90	अमरलौक भेद	—	89

—प्रस्तावना—

✍ आध्यात्म की दुनियां, जब से सृष्टि् बनी है तभी से जिज्ञासु—जन इस दुनियां को जानने को उत्सुक हैं, वह दुनियां जिसे हम आध्यात्म या रूहानियत, जो सृष्टि्—रचियता को जानने की जिज्ञासा, उस रचियता को मानने या ना मानने वाले दोनों की कोतूहल का विषय रही । इतनी ढेर सारी मान्यतांए, धर्म रहनुमाओं, अवतारों, पैग़म्बरों जिनका वर्णन अलग—अलग धर्म—ग्रन्थों,शास्त्रों,उपनिषदों में असंख्य गिनती में विद्यमान है, यह सारे आराध्य एक सीमा तक (निराकार—भगवान) की सृष्टि् तक सीमित हैं । मगर हमारे संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' व अनेक संतों ने जिनमें संत श्री मधु परमहंस जी, संत कबीर साहिब जी, संत रविदास जी, संत दादू दयाल जी आदि संतों ने उस परमपिता परमेश्वर को जिसे साहिब नाम से पुकारा गया, को इस निराकार की सीमा से उपर बताया है, जैसे कि सभी धर्मों के ग्रन्थ व पुस्तकें एकमत हैं कि ईश्वर एक है (गाड इज़ वन) और संतों अनुसार वो मालिक, ईश्वर, निराकार की सत्ता से अलग, मौक्ष—दाता, साहिब नाम या सत्तपुरूष नाम से सम्बोधित किए गये । निराकार की भक्ति करने तक स्वर्ग (कुछ काल तक मुक्ति) और फिर जीवन, जबकि साहिब भक्ति से मौक्ष (गर्भ से सदा सदा के लिए छुटकारा) मिलता है ।

✍

संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' उन्हीं साहिब सतपुरूष महिमां का गुणगान व प्रचार करते हैं। सतगुरू जी ने आध्यात्मिक व रूहानी सफ़रनामों के अनुभवों को भजनों के रूप में अपने 'साहिब सत्तपुरूष महिमां' के प्रथम संस्करण में कलम बद्ध तो किया ही था, परन्तु इसके बाद के अनेकों अनुभवों और साहिब सत्तपुरूष सत्ता की महिमां और दात का वर्णन जिससे कि रूहानियत के प्रति जागरूक व इच्छुक जिज्ञासु जन इसका भरपूर लाभ उठा कर मौक्ष को प्राप्त हो सकें, इसका पूरा सारांश उन्होंने अपने इस ''साहिब सत्तपुरूष महिमां'' के द्वित्य संस्करण में भी 'साहिब सतपुरूष जी' की सुरति द्वारा बड़ा अदभुद वर्णन किया है, ताकि सम्पूर्ण मानव समाज इन भजनों को पढ़ के साहिब महिमां को समझे, जाने और जन्म मरण के बंधन से मुक्त होके पूर्ण मौक्ष को प्राप्त हो सके ।

नोट :— सत्तगुरू परमपूजनीय संत परमहंस श्री 'वे नाम जी' के आध्यात्मिकता से भरपूर अनुभवों की अमृत वर्षा को ग्रहण करने के लिए उनकी सुरति द्वारा लिखित एक अदभुद ग्रंथ ''मूल सागर'' आप सब पाठकों और साधकों के समक्ष उन्होंने प्रस्तुत किया है, इस अनमोल दात को ग्रहण कर अपना ये जीवन सार्थक करें ।

मानव की अंतिम या़त्रा का भेद

अंत काल जब जीव का आवे
यथा कर्म वह देही पावे

1 गुद्धा द्वार से जीव निकासा
नर्क योनि में पावे वासा

2 नाभी–द्वार से जीव जब जाए
जलचर–योनि में वासा पाए

3 मुख–द्वार से जीव जब जाए
अन्न–खानी में प्रकटाए

4 श्वांसा–द्वार से जीव जब जाए
अण्डज–खानी में प्रकटाए

5 नेत्र–द्वार से जीव जब जाए
मक्खी–मच्छर आदि तन को पाए

6 श्रवण–द्वार से जीव जब जाए
प्रेत योनि में तुरन्त वासा पाए

7 दशम–द्वार से जीव जब जाए
स्वर्ग–लौक में वासा पाए
राजा हो के जग में आए

8 ग्यारवें–द्वार से जीव जब जाता
परम–पुरूष के लौक समाता
बहुरी ना ईस भव–सागर आता
फिर नांहि गर्भ में समाता ।।

''कहे कबीर सुनो भई साधो :–
ग्यारवें–द्वार का भेद सुरत–सब्द में रहता
बिन पूर्ण–संत कोई भेद ना पाता
पूर्ण–संत जो साहिब को पाता
वही सार–सब्द का भेद है पाता
सार–सब्द सत्तपुरूष का वासा''

–0–